

२०६७, भादौ-२

सर्वोच्च अदालत बुलेटिन

पाक्षिक प्रकाशन

वर्ष १९, अङ्क १०

२०६७, भादौ १६ - ३१

पूणाङ्क ४३६



प्रकाशक

सर्वोच्च अदालत

रामशाहपथ, काठमाडौं

फोन नं. ४२५०७४२, ४२६२३९७, ४२६२३९८, ४२६२८०१, ४२५८१२२ Ext.२६५१ (सम्पादन), २६५० (छापाखाना), २१०९ (विक्री) फ्याक्स:
४२६२८७८, पो.ब.नं. २०४३८

Email: info@supremecourt.gov.np, Web: www.supremecourt.gov.np

सम्पादन तथा प्रकाशन समिति

| | |
|--|-----------|
| माननीय न्यायाधीश श्री प्रकाश वस्ती | - अध्यक्ष |
| सहरजिष्टार श्री विपुल न्यौपाने | - सदस्य |
| सम्पादक श्री तेजेन्द्रप्रसाद शर्मा सापकोटा | - सचिव |

सम्पादन शाखामा कार्यरत कर्मचारीहरू

कम्प्युटर अधिकृत श्री शम्भुप्रसाद आचार्य
ना.सु.श्री कृष्णवहादुर गुरुङ
ना.सु.श्री सम्भना सिम्खडा पुडासैनी
डि. श्री सरस्वती खड्का
कार्यालय सहयोगी श्री कृष्णवहादुर श्रेष्ठ

२०६७ भदौ १६ देखि ३१ सम्म विभिन्न इजलासहरूबाट सम्पादन शाखामा प्राप्त निर्णय / आदेशहरू

| | |
|---------------|------------|
| विशेष इजलास | ५ |
| पूर्ण इजलास | ३ |
| संयुक्त इजलास | २ |
| इजलास नं. १ | ५ |
| इजलास नं. २ | ६ |
| इजलास नं. ३ | ५ |
| इजलास नं. ४ | १० |
| इजलास नं. ५ | २ |
| इजलास नं. ६ | १८ |
| इजलास नं. ७ | ९ |
| इजलास नं. ८ | २५ |
| इजलास नं. ९ | १७ |
| इजलास नं. १० | १५ |
| एकल इजलास | ५ |
| जम्मा | १२७ |

उद्धरण गर्ने तरिका:

सअ बुलेटिन २०६... .. १ वा २ पूर्णाङ्क , पृष्ठ
(साल) (महिना)

उदाहरणार्थ: सअ बुलेटिन, २०६७, भदौ - २, पूर्णाङ्क ४३६, पृष्ठ ११

२०६७ साल भदौ १६ गतेदेखि ३१ गतेसम्म मुद्दाको लगत फछ्यौट विवरण

| क्र. सं. | विषयगत मुद्दा | | लगत | | | फछ्यौट | बाँकी | अधिको बाँकी |
|----------|----------------|--------------------|------------------|---------------|-------|--------|-------|-------------|
| | | | जिम्मेवारी सरेको | यस वर्ष परेको | जम्मा | संख्या | | |
| १ | पुनरावेदन पत्र | | 5110 | 456 | 5566 | 317 | 5249 | 5231 |
| २ | रिट निवेदन | बन्दीप्रत्यक्षीकरण | 5 | 10 | 15 | 11 | 4 | 5 |
| ३ | | अन्य रिट | 2523 | 261 | 2784 | 162 | 2622 | 2590 |
| ४ | साधक | | 74 | 12 | 86 | 5 | 81 | 77 |
| ५ | मुद्दा निवेदन | दोहो-न्याई पाऊँ | 943 | 202 | 1146 | 281 | 864 | 915 |
| | | पुनरावलोकन | 568 | 50 | 618 | 425 | 193 | 172 |
| | | पुनरावेदको अनुमति | 142 | 0 | 142 | 33 | 109 | 114 |
| ६ | अन्य निवेदन | निवेदन | 15 | 68 | 83 | 62 | 21 | 21 |
| ७ | | प्रतिवेदन | 34 | 43 | 77 | 42 | 35 | 28 |
| ८ | विविध | | 55 | 5 | 60 | 6 | 54 | 58 |
| जम्मा | | | ९४६९ | ११०७ | १०५७६ | १३४४ | ९२३२ | ९२०० |

२०६७ साल भदौ १६ देखि ३१ गतेसम्मको मुद्दातर्फको संख्यात्मक विवरण

| | | | |
|--|------|--------------------|-----|
| (क) कार्यदिन | ११ | (ड) आदेश संख्या | २३१ |
| (ख) पेशी चढेका मुद्दा संख्या | १७६१ | (च) फछ्यौट संख्या | २५६ |
| (ग) कानून व्यवसायीद्वारा स्थगित भएका मुद्दा संख्या | ५११ | (छ) हेर्न नभ्याएका | ५९६ |
| (घ) हेर्न नमिल्ने मुद्दा संख्या | १३४ | (ज) नि.सु. संख्या | ३३ |

समूहकृत (अभियान) मुद्दाहरूको २०६७ भदौ ३१ गतेसम्मको स्थिति*

| समूह | कूल मुद्दा | फैसला | | | हेदहिर्दे | नि.सु. | मेलमिलापमा गएको | बाँकी |
|-------------|------------|------------------|-------------|-------|-----------|--------|-----------------|-------|
| | | अधिल्लो अवधिसम्म | यस अवधिसम्म | जम्मा | | | | |
| फौजदारी | १९७ | ७ | ११ | १८ | १२ | १ | | १७९ |
| देवानी | ८७१ | ७८ | ४० | ११८ | २ | २७ | १४ | ७५३ |
| रिट/वाणिज्य | १५२ | १० | १० | २० | | १ | | १३२ |

* २०६३ असार मसान्तसम्ममा दर्ता भै फछ्यौट हुन बाँकी मुद्दा यस समूहमा समावेश गरिएका छन् ।

यो समाचार बुलेटिन हो । निर्णय संक्षेपीकरण गर्दा इजलासले नै प्रयोग गरेका शब्द यहाँ नपरेका पनि हुन सक्दछन् । यहाँ उल्लिखित निर्णयहरूको नक्कल लिन सकिनेछ ।

नेपाल कानून पत्रिका तथा सर्वोच्च अदालत बुलेटिन
अब हाम्रो वेभसाइटमा उपलब्ध छन्

ठेगाना

www.supremecourt.gov.np

- यो वेभसाइट खोलेपछि बायाँतर्फ नेपाल कानून पत्रिका तथा त्यसको तल सर्वोच्च अदालत बुलेटिनमा क्लिक गर्नुहोस् ।
- २०६६ साल वैशाखदेखिका यी पत्रिकामा समाविष्ट निर्णयहरू पढन र अर्को निर्णय नभएसम्म निःशुल्क डाउनलोड गर्न सकिनेछ ।

नेपाल कानून आयोगको वेभसाइटमा संविधान समेत हालसम्म
२५० जति ऐनहरू र तीमध्ये १०० वटा जति ऐनको अंग्रेजी
अनुवाद निःशुल्क पढन र डाउनलोड गर्न सकिनेछ ।

ठेगाना

www.lawcommission.gov.np

विषयसूची

| क्र. सं | विषय | पक्ष / विपक्ष | पृष्ठ |
|----------------------|----------------------|--|------------|
| विशेष इजलास | | | १-३ |
| 1= | उत्प्रेषण समेत | अधिवक्ता प्रकाशमणि शर्मा समेत वि. प्र.मं. तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत | |
| 2= | उत्प्रेषण समेत | अधिवक्ता प्रकाशमणि शर्मा समेत वि. प्र.मं. तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत | |
| 3= | उत्प्रेषण समेत | अधिवक्ता सुदीप पौडेल समेत वि. अध्यक्ष संवैधानिक परिषद् प्र.मं. तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत | |
| 4= | उत्प्रेषण समेत | उमाशंकर शर्मा वि. प्र.मं. तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत | |
| पूर्ण इजलास | | | ३-४ |
| 5= | परमादेश समेत | सुमित्रा हाडा वि. लोकसेवा आयोग समेत | |
| 6= | कर्तव्य ज्यान | हिराकाजी हमाल वि. नेपाल सरकार | |
| 7= | उत्प्रेषण | रामप्रसाद भट्टराई वि. प्रमुख भन्सार अधिकृत कैलाली भन्सार कार्यालय समेत | |
| संयुक्त इजलास | | | ५ |
| 8= | बन्दीप्रत्यक्षीकरण | माइली तामाङ्ग वि. ललितपुर जिल्ला अदालत समेत | |
| 9= | कुटपीट अंगभंग | नेपाल सरकार वि. गणेशराम खर्बुजा समेत | |
| इजलास नं. १ | | | ५-७ |
| 10= | उत्प्रेषण | नुमाकान्त खरेल वि. सामान्य प्रशासन मन्त्रालय समेत | |
| 11= | परमादेश | कुसुमीदेवी यादव वि. जिल्ला विकास समिति साभा विकास शाखा धनुषा समेत | |
| 12= | लागू औषध खैरो हिरोइन | नेपाल सरकार वि. डवलवहादुर बम | |
| 13= | लागू औषध खैरो हिरोइन | चन्दन शर्मा वि. नेपाल सरकार | |

| इजलास नं. २ | | | ७-८ |
|--------------------|------------------------|---|--------------|
| 14= | परमादेश | चक्रवहादुर शंकर वि. प्र.मं. तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत | |
| 15= | परमादेश समेत | मीरा हुंगाना वि. प्र.मं. तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत | |
| 16= | अंश | रामरत्न मधैया वि. अर्जुनकुमार मधैया | |
| 17= | निर्णय बदर हक कायम | रामरत्न मधैया वि. अर्जुनकुमार मधैया | |
| 18= | परमादेश | नरेन्द्रराज श्रेष्ठ समेत वि. भूमिसुधार कार्यालय भक्तपुर समेत | |
| 19= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | नम्रता कुँवर के.सी.वि. गायत्री के.सी.समेत | |
| इजलास नं. ३ | | | ९-१० |
| 20= | परमादेश | धनपति सापकोटा समेत वि. काठमाडौं महानगरपालिका समेत | |
| 21= | उत्प्रेषण परमादेश | राजकिशोर यादव वि. निजामती किताबखाना समेत | |
| 22= | लेनदेन | जयप्रकाश यादव वि. चण्डीप्रसाद भगत | |
| 23= | निर्णय बदर | सुर्जीदेवी भगाड वि. भुवनकुमारी बस्नेत | |
| 24= | अंश नामसारी | महाबली अहिर वि. भागी अहिर समेत | |
| इजलास नं. ४ | | | १०-१२ |
| 25= | उत्प्रेषण | छोटेला साह तेली वि. पुनरावेदन अदालत हेटौंडा समेत | |
| 26= | उत्प्रेषण समेत | दामोदर दाहाल वि. हिमालयन बैंक मुख्य कार्यालय समेत | |
| 27= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | देवीदत्त रावत क्षेत्री वि. पुनरावेदन अदालत नेपालगञ्ज समेत | |
| 28= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | अशोककुमार चौधरी वि. पुनरावेदन अदालत राजविराज समेत | |
| 29= | उत्प्रेषण परमादेश | रामदेव पन्त वि. मोतीकुमार श्रेष्ठ समेत | |
| 30= | निषेधाज्ञा | सुजीललाल प्रधानाङ्ग समेत वि. भुवनेश्वरी प्रधानाङ्ग समेत | |

| | | |
|--------------------|------------------------|--|
| 31= | निषेधाज्ञा | ईश्वरसिंह महर्जन वि. काजीलाल महर्जन समेत |
| 32= | निषेधाज्ञा | लैनबहादुर घर्ती वि. महानगरीय प्रहरी परिसर काठमाडौं समेत |
| 33= | परमादेश | नन्दकुमारी पौडेल वि. कोहलपुर नगर विकास समिति बाँके |
| 34= | उत्प्रेषण | बृषबहादुर राई वि. शिक्षा तथा खेलकूद मन्त्रालय समेत |
| इजलास नं. ५ | | १३ |
| 35= | रकम दिलाई पाऊँ | यज्ञप्रसाद बजगाईं समेत वि. सूर्यनाथ बास्तोला समेत |
| 36= | उत्प्रेषण परमादेश | गोपाल राजभण्डारी वि. कृषि विकास बैंक मुख्य कार्यालय समेत |
| इजलास नं. ६ | | १३-१८ |
| 37= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | अशोककुमार यादव वि. पुनरावेदन अदालत राजविराज समेत |
| 38= | उत्प्रेषण | केशरकुमार नेपाली वि. पुनरावेदन अदालत हेटौँडा समेत |
| 39= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | ईश्वरी सिलवाल समेत वि. प्र.मं. तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत |
| 40= | उत्प्रेषण समेत | गोपालदास कर्माचार्य वि. जिल्ला भूमिसुधार कार्यालय भापा समेत |
| 41= | उत्प्रेषण समेत | गोपालदास कर्माचार्य वि. जिल्ला भूमिसुधार कार्यालय भापा समेत |
| 42= | उत्प्रेषण समेत | फेकन राउत गडेरी वि. लोकसेवा आयोग केन्द्रीय कार्यालय समेत |
| 43= | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. गोरे साकी समेत |
| 44= | उत्प्रेषण | भगवतीदेवी खोखाली वि. भूमिसुधार तथा व्यवस्था मन्त्रालय समेत |
| 45= | कीर्ति | नजरूल शेष मियाँ वि. नेपाल सरकार |
| 46= | ज्यान मार्ने उद्योग | नेपाल सरकार वि. दीपेन भुजेल |
| 47= | बन्दीप्रत्यक्षीकरण | वेदप्रसाद भूर्तेल समेत वि. पुनरावेदन अदालत इलाम समेत |
| 48= | उत्प्रेषण | लक्ष्मीदास कथवनिया वि. भगवतदास समेत |
| 49= | उत्प्रेषण | रमेशप्रसाद खरेल वि. जिल्ला शिक्षा कार्यालय काभ्रेपलाञ्चोक समेत |
| 50= | उत्प्रेषण समेत | पुतली नानी श्रेष्ठ वि. कस्तुरी मैयाँ श्रेष्ठ समेत |
| 51= | जालसाजी | मेउची पौडेल समेत वि. कुलानन्द पौडेल |

| | | |
|--------------------|--------------------------|--|
| 52= | अंश | कुलानन्द पौडेल वि. मेउची पौडेल |
| इजलास नं. ७ | | १८-२० |
| 53= | अंश दर्ता | रामविलास सिंह राजपुत समेत वि. शलेन्द्र सिंह |
| 54= | अवण्डा सम्पत्ति | प्रेमकुमारी कुर्मी समेत वि. मन्तराज कुर्मी चौधरी समेत |
| 55= | अंश | बिमलादेवी श्रीवास्तव वि. तारादेवी श्रीवास्तव समेत |
| 56= | जग्गा दर्ता प्रमाणपूर्जा | भवरलाल धाडेवा समेत वि. पदमदेवी मल्ल |
| 57= | अदालतको अपहेलना | भवरलाल धाडेवा समेत वि. विजय पदम मल्ल |
| 58= | धनमाल | उज्वल ज्योति कंसाकार वि. रिना कंसाकार |
| 59= | सम्बन्ध विच्छेद | उज्वल ज्योति कंसाकार वि. रिना कंसाकार |
| इजलास नं. ८ | | २०-२५ |
| 60= | उत्प्रेषण परमादेश | गणेशप्रसाद सिग्देल वि. ऊर्जा मन्त्रालय समेत |
| 61= | उत्प्रेषण समेत | बेफु चौधरी वि. मोहियानी समिति मुकाम भू.सु. कार्यालय दाङ्ग समेत |
| 62= | उत्प्रेषण परमादेश | गणेशकुमार श्रेष्ठ वि. भूमिसुधार कार्यालय भक्तपुर समेत |
| 63= | वन पैदावार हटायो | जयबहादुर विष्ट वि. नेपाल सरकार |
| 64= | फैसला बदर | गंगाराम चापागाईं वि. मुनिमायाँ चापागाईं |
| 65= | अंश चलन | खड्गप्रसाद चापागाईं समेत वि. विष्णुलाल चापागाईं समेत |
| 66= | बन्दीप्रत्यक्षीकरण | अर्जुन थापा वि. काठमाडौं जिल्ला अदालत समेत |
| 67= | निर्णय बदर दर्ता | देवनारायण धिमाल वि. मालपोत कार्यालय दमक भापा |
| 68= | सवारी ज्यान | लक्ष्मण राना वि. नेपाल सरकार |
| 69= | डाँका | नेपाल सरकार वि. द्वारिकालाल महतो समेत |
| 70= | खिचोला दर्ता बदर | इसरवती देवी वि. रासनारायण यादव समेत |
| 71= | जबरजस्ती करणी | भुलन सिंह वि. नेपाल सरकार |
| 72= | निषेधाज्ञा | गंगाई हाथी वि. मल्हूर देवी समेत |
| 73= | परमादेश | रामदयाल सहनी वि. गा.वि.स.को कार्यालय अयोध्यानगर सिराहा समेत |

| | | |
|--------------------|------------------------|--|
| 74= | निपेधाज्ञा | किशोरी मण्डल समेत वि.रामजी साह तेली |
| 75= | उत्प्रेषण परमादेश | असगर अली सिद्दीकी वि. रामप्रसाद गडरिया समेत |
| 76= | उत्प्रेषण परमादेश | सुरेन्द्रमान सिंह डंगोल वि. भूमिसुधार कार्यालय समेत |
| 77= | उत्प्रेषण समेत | नगेन्द्र राउत कुर्मी वि. जिल्ला भूमिसुधार कार्यालय रौतहट समेत |
| 78= | उत्प्रेषण परमादेश | गीता थापा कार्की समेत वि. भौतिक योजना तथा निर्माण मन्त्रालय समेत |
| इजलास नं. ९ | | २५-२९ |
| 79= | निपेधाज्ञा परमादेश | निर्मला खड्का क्षेत्री समेत वि. हरिमाया खड्का समेत |
| 80= | सार्वजनिक अपराध | नेपाल सरकार वि. हरिप्रसाद चौलागाईं |
| 81= | लेनदेन | शुक्रबहादुर श्रेष्ठ वि. मनमाया प्रसाईं समेत |
| 82= | अदालतको अपहेलना | टेकबहादुर रावल वि. कलर एक्सप्रेस प्रा.लि. अनामनगर काठमाडौं समेत |
| 83= | उत्प्रेषण परमादेश | डा. परमेश्वरी श्रेष्ठ समेत वि. स्वास्थ्य तथा जनसंख्या मन्त्रालय |
| 84= | उत्प्रेषण परमादेश | गजेन्द्रप्रसाद डगौरा थारू वि. भूमिसुधार कार्यालय कैलाली समेत |
| 85= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | फाल्गुनी भट्टराई वि. मेची भन्सार कार्यालय भापा समेत |
| 86= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | नेत्रप्रसाद मैनाली समेत वि. मालपोत कार्यालय पर्सा समेत |
| 87= | उत्प्रेषण | लोचन यादव समेत वि. लोकसेवा आयोग केन्द्रीय कार्यालय समेत |
| 88= | उत्प्रेषण समेत | मुकुन्दराज शर्मा वि. फुल्टेका माध्यमिक विद्यालय नेपालगञ्ज |
| 89= | अंश दपोट | बिटोरी महतो कोइरी वि. सुजानदेवी महतो कोइरी |
| 90= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | श्यामकुमार श्रेष्ठ वि. निजामती किताबखाना समेत |
| 91= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | चन्द्रकिरण श्रेष्ठ समेत वि. कृषि तथा सहकारी मन्त्रालय समेत |
| 92= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | श्रुतिधर काफ्ले वि. शिक्षा तथा खेलकुद मन्त्रालय समेत |

| | | |
|---------------------|----------------------------|---|
| 93= | उत्प्रेषण मिश्रित प्रतिपेध | विश्वनाथ केडिया वि. सर्लाही जिल्ला विकास समितिको कार्यालय मलंगवा समेत |
| इजलास नं. १० | | २९-३३ |
| 94= | कर्तव्य ज्यान | फतेसिंह बुढा वि. नेपाल सरकार |
| 95= | लेनदेन | कुमारीदेवी चौधरी वि. छेदीलाल माभी समेत |
| 96= | कर्तव्य ज्यान | बृखबहादुर घिमिरे वि. नेपाल सरकार |
| 97= | छूट जग्गा दर्ता | इन्द्रभुषण भ्वा वि. रामशरण भ्वा |
| 98= | अंश चलन | मनिष नेपाल समेत वि. विनोदराज शर्मा (नेपाल) |
| 99= | निर्णय बदर हक कायम | नक्कली गारू वि. रामकृष्ण गारू समेत |
| 100= | जीउ मास्ने बेच्ने | वीरसिंह तामाङ्ग वि. नेपाल सरकार |
| 101= | लागू औषध चरेश | नेपाल सरकार वि. राजेन्द्र गोपाल राजभण्डारी समेत |
| 102= | मोही लगत | कट्टा निलम चौधरी थारू वि. हुकुमलाल थारू |
| 103= | उत्प्रेषण | दक्षकुमार पोखरेल वि. अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोग समेत |
| 104= | जबरजस्ती करणी | नेपाल सरकार वि. रत्नलाल श्रेष्ठ |
| 105= | हर्जाना पाऊँ | पिम्बा भोटे वि. विजयत्तध्वज थापा |
| एकल इजलास | | ३३-३४ |
| 106= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | उषा श्रेष्ठ वि. महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय समेत |
| 107= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | हेमा महर्जन वि.मोतिराम चापागाईं समेत |
| 108= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | नरेशबाबु श्रेष्ठ वि. प्र.मं. तथ मन्त्रपरिषद्को कार्यालय समेत |
| 109= | उत्प्रेषण परमादेश | आसपानी गुरुङ्ग समेत वि. मन्त्रपरिषद्को कार्यालय समेत |
| 110= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | मोहनकुमार रिजाल समेत वि.प्र.मं. तथा मन्त्रपरिषद्को कार्यालय समेत |

सर्वोच्च अदालतका नियमित प्रकाशनहरू

- ☞ सर्वोच्च अदालत बुलेटिन (पाक्षिक)
- ☞ नेपाल कानून पत्रिका (मासिक)
- ☞ विषयगत नजीर संग्रह (वार्षिक)
 - भाग १: संवैधानिक कानून
 - भाग २: सार्वजनिक सरोकार
 - भाग ३: मानव अधिकार तथा लैंगिक न्याय
 - भाग ४: देवानी कानून: सम्पत्ति
 - भाग ५: देवानी कानून: पारिवारिक
 - भाग ६: फौजदारी कानून: सरकारवादी
 - भाग ७: फौजदारी कानून: दुनियावादी
 - भाग ८: कार्यविधि कानून: देवानी
 - भाग ९: कार्यविधि कानून: फौजदारी
 - भाग १०: उद्योग वाणिज्य र कर
 - भाग ११: राष्ट्रसेवक कर्मचारी
- ☞ न्यायपालिकाको दोस्रो रणनीतिक योजना (आवधिक)
- ☞ अदालतसम्बन्धी नियमावली / निर्देशिका / न्यायाधीश आचारसंहिता
- ☞ सर्वोच्च अदालत वार्षिक प्रतिवेदन (वार्षिक)
- ☞ टेबुल पात्रो (वार्षिक)
- ☞ सर्वोच्च अदालतका केही निर्णयहरूको अंग्रेजी अनुवाद (वार्षिक) - प्रकाशोन्मुख

विशेष इजलास

१

मा.न्या.श्री बलराम के.सी., मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, रि.नं. ०६३-WS-००२४, उत्प्रेषण समेत, अधिवक्ता प्रकाशमणि शर्मा समेत वि. प्र.मं. तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत

अदालतको विचाराधीन विषयमा संसदमा छलफल गर्न नपाइए जस्तै संसदको विचाराधीन विषयमा अदालतमा छलफल हुँदैन । विधेयक प्रमाणीकरण भई ऐनको रूप धारण नगर्दासम्म त्यसलाई न्यायिक पुनरावलोकनको विषय बनाउन नमिल्ने भएकाले यसमा विवाद गर्न नमिल्ने । त्यसरी ऐन बन्ने प्रक्रियाले नै पूर्णता नपाएको अवस्थामा विधेयकमा रहेका विषयहरूको संवैधानिकता परीक्षण गर्न सिद्धान्ततः नमिल्ने ।

विधेयकमा राष्ट्राध्यक्षले हस्ताक्षर गरी त्यसलाई स्वीकृत गरेपछि पनि त्यस्तो कानूनको बारेमा राजपत्रमा सूचना प्रकाशित गरी राजपत्रमार्फत प्रचार प्रसार गरी जनतालाई सार्वजनिक रूपमा सूचित र जानकारी गराउन त्यसलाई अनिवार्य रूपले सार्वजनिक रूपमा प्रकाशित गर्नेपर्दछ । त्यसरी प्रकाशन गर्ने कुरा सरकारका लागि option नभै Compulsion नै हो । Ignorance of law is not an excuse एउटा सामान्य सिद्धान्त नै हो । कानून सबैले पढ्छन् भन्ने हुँदैन, त्यसकारण प्रत्येक विषयको कानून सबैलाई थाहा जानकारी हुँदैन । यही यथार्थलाई विचार गरी कसैले पनि कानून आफूलाई थाहा नभएको भन्ने जिकीर लिन नपाओस् भन्ने उद्देश्यले सरकारको मुखपत्रका रूपमा रहने राजपत्रमा प्रकाशित गरिन्छ । र, यही राजपत्रमा प्रकाशन गरेको कारणले गर्दा कसैले पनि कानूनको अनभिज्ञताको दावी गर्न नपाउने अवस्था सिर्जना हुन्छ । तर, उल्लिखित मान्य सिद्धान्त र व्यवस्थापन विधिका स्थापित प्रक्रियाहरूको विचार नगरी त्यसको विपरीत हुने गरी संविधानको धारा १०७ को उपधारा (१) अन्तर्गत यस अदालतलाई प्राप्त असाधारण

अधिकारक्षेत्र invoke गर्न कुनै पनि नेपाली नागरिकले निवेदन दिन पाउने गरी गरिएको हकद्वैयासम्बन्धी उदार व्यवस्थालाई दुरुपयोग गरी विधायिकाभित्र विचाराधीन रहेको अपरिपक्व अवस्थाको विषयमा दायर हुन आएको प्रस्तुत निवेदन दर्ताका समयमा सम्बन्धित इजलासले पनि त्यस्तो निवेदन ग्रहण गर्न इन्कार गरिनु पर्ने ।

इजलास अधिकृत : उमेश कोइराला
इति संवत् २०६७ साल वैशाख ३० गते रोज ५ शुभम् ।

२

मा.न्या.श्री बलराम के.सी., मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, रि.नं. ०६४-WS-००६, उत्प्रेषण समेत, अधिवक्ता प्रकाशमणि शर्मा समेत वि. प्र.मं. तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत

विशेष प्रकृतिका कार्यक्रमहरूको प्रारम्भ गर्ने सिलसिलामा त्यसका लागि आवश्यक पर्ने स्रोत, साधन र आवश्यक पूर्वाधारको विकासका लागि के कस्ता प्रवन्ध गरिनु पर्छ भन्ने जस्ता कुराहरूलाई पनि अदालतले मनन गर्ने पर्छ र त्यस्ता विषय स्वभावतः प्राविधिक मूल्याङ्कनमा आधारित हुने हुँदा त्यसको मूल्याङ्कन रिट क्षेत्रबाट गर्न सम्भव पनि हुँदैन । प्रस्तुत विवादका सन्दर्भमा सरकारले तयार पारेको कार्ययोजनाले सरकारको क्षमता र उसको पूर्व तयारीका विषयहरूलाई उजागर गरेको छ । त्यसरी कार्ययोजना बनाएर अघि बढेको अवस्थामा त्यसभन्दा बाहिर गएर आदेश जारी गर्दा सो कार्ययोजनाको समग्र पक्ष नै प्रभावित हुने र कार्ययोजनाअनुरूप क्रमशः हुँदै गरेका कार्यहरू समेत अवरूद्ध हुन पुग्ने यथार्थतालाई पनि ध्यानमा राखिनु अपरिहार्य नै हुन्छ । अदालतबाट जारी भएका आदेशहरूको कार्यान्वयन हुनुपर्छ, कार्यान्वयन हुनै नसक्ने विषयमा आदेश जारी गर्दा न्यायपालिकाप्रतिको आस्था र विश्वासमा नै ह्रास आउन सक्ने ।

संविधानले नै मौलिक हकअन्तर्गत माध्यमिक तहसम्म निःशुल्क शिक्षाको हक सुनिश्चित गरेको सन्दर्भमा शिक्षा ऐनका साविकका व्यवस्थाहरूमा समसामयिक रूपमा संशोधन र

परिमार्जन हुनुपर्ने कुरामा विवाद हुन सक्दैन । लिखित जवाफ प्रस्तुतकर्ता कानून, न्याय तथा संसदीय व्यवस्था मन्त्रालयका तर्फबाट प्रस्तुत गरिएको लिखित जवाफमा स्पष्ट रूपमा संविधान बनाउनु पर्ने कानून निर्माण गर्ने कार्यमा सम्बन्धित निकायबाट पहल भैरहेको भनिएको र अर्का विपक्षी शिक्षा तथा खेलकुद मन्त्रालयको लिखित जवाफमा पनि संविधानको भावना तथा राष्ट्रिय साधन स्रोतले भ्याएसम्म नियमबमोजिम देशको शैक्षिक नीति निर्माण गर्दै लैजाने नेपाल सरकारको नीति, सोच र उद्देश्य रहेको भनी प्रतिबद्धता व्यक्त भैरहेको सन्दर्भमा राज्यले आफ्नो साधन, स्रोत र क्षमता समेतलाई मध्यनजर गरी उसले गर्ने व्यवस्थापनको कुरामा हतारो गरी हस्तक्षेप गरिनु उचित मान्न सकिएन । नेपालको अन्तरिम संविधान, २०६३ को धारा १७ को उपधारा (२) मा राज्यबाट कानूनमा व्यवस्था भएबमोजिम माध्यमिक तहसम्म निःशुल्क शिक्षा पाउने हक हुने गरी गरिएको व्यवस्थाले प्रत्याभूत गरेको मौलिक हकको विषयमा कानूनद्वारा व्यवस्थित गर्न सकिने नै हुन्छ । त्यसैले राज्यले योजनावद्ध किसिमले क्रमिकरूपमा लागू गर्दै लगी निश्चित अवधिभित्र त्यसलाई पूर्णता दिने गरी राज्यका तर्फबाट व्यक्त गरिएको प्रतिबद्धता समेतलाई हृदयंगम गर्दा शिक्षा ऐन, २०२८ को दफा १६घ को उपदफा (२) मा रहेको व्यवस्था नेपालको अन्तरिम संविधान, २०६३ को धारा १७ को उपधारा (२) सँग बाभिएको भन्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : उमेश कोइराला
इति संवत् २०६७ वैशाख ३० गते रोज ५ शुभम् ।

३

मा.न्या.श्री बलराम के.सी., मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला, रि.नं. ०६५-WS-००२३, उत्प्रेषण समेत, अधिवक्ता सुदीप पौडेल समेत वि. अध्यक्ष संवैधानिक परिषद्, प्र.मं. तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत

बदर घोषित गर्न माग गरेको संवैधानिक अङ्क पदाधिकारीको नियुक्तिसम्बन्धी कार्यविधि तथा संवैधानिक परिषद्को काम, कर्तव्य र अधिकार तथा कार्यविधिसम्बन्धी नियमावली, २०६५ लाई

संवैधानिक परिषद् (काम, कर्तव्य, अधिकार र कार्यविधि) सम्बन्धी ऐन, २०६६ को दफा १४(१) ले खारेज गरिसकेको देखिन्छ । साथै सोही दफाको उपदफा (२) ले उक्त खारेज भएको नियमावलीबमोजिम भए गरेका काम कारवाही सोही ऐनबमोजिम भए गरेको मानिने उद्घोष गरेको समेत देखिँदा उक्त नियमावलीको सम्बन्धमा अब उप्रान्त विचार गरिरहनु नपर्ने ।

इजलास अधिकृत : दीपककुमार दाहाल

कम्प्युटर : सुन्दरबहादुर कार्की

इति संवत् २०६६ साल माघ ७ गते रोज ५ शुभम् ।

● यसमा यसै प्रकृतिको रिट नं. ०६५-WS-००२७२, परमादेश लगायत उपयुक्त आदेश, माधवकुमार बस्नेत समेत वि. प्र.मं. तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत भएको मुद्दामा यसैअनुसार फैसला भएको छ ।

४.

मा.न्या.श्री बलराम के.सी., मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, रि.नं. ०६६-WS-००३६, उत्प्रेषण समेत, उमाशंकर शर्मा वि. प्र.मं. तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत

नेपाल सरकारको समेत स्वामित्व रही कम्पनी ऐन, २०६३ अन्तर्गत सञ्चालन भएको कम्पनीमा सेवारत निवेदकले सो कम्पनीको कर्मचारी विनियमावलीको व्यवस्थाबमोजिमको नेपाल दूरसञ्चार कम्पनी लिमिटेड, कर्मचारी विनियमावलीमा पनि सोही व्यवस्था गर्नु भनी विशिष्टीकृत सेवाप्रदायक कम्पनीको नीतिगत कुरामा अदालतले हस्तक्षेप गर्नु वाञ्छनीय नहुने ।

कम्पनीको विनियमावलीबमोजिमको सेवा सुविधाबाट निवेदकलाई वञ्चित गरिएको अवस्था पुष्टि भए यस अदालतले उपयुक्त आदेश जारी गर्नसक्ने अवस्था रहने हो । सेवाको प्रकृति र सञ्चालनको विशेष व्यवस्था भएको कम्पनीको हकमा सो कम्पनीले गरेको निर्णय वा काम कारवाहीमा प्रत्यक्ष कानूनी त्रुटि वा क्षेत्राधिकारको त्रुटि एवं प्राकृतिक न्यायको सिद्धान्तविपरीत देखिए उपयुक्त आदेश जारी हुन सक्ने अवस्था रहने ।

महिला र मधेसी भन्ने उस्तै वर्ग होइन । महिलाभित्र मधेसीलगायतका अन्य जाति जनजातिहरू पनि पर्दछन् । यो वृहत्तर वर्ग हो । र यसको विशिष्ट आवश्यकता र ऐतिहासिक रूपमा पछि परेको आधारमा यस वर्गलाई पुरूषसहर समान बनाउन विशेष संरक्षण गरी उसको सहभागिता बढाउन खोजिन्छ । राज्यले पनि समुदायको प्रकृति र हितका आधारमा कुन वर्गलाई कस्तो किसिमबाट संरक्षण र सशक्तीकरण गरी संबोधन गर्नुपर्ने हो विचार गर्नुपर्ने हुन्छ । महिलालाई दिइने संरक्षण र सुविधा सकारात्मक कदम हो । सकारात्मक विभेद गरी संगठनको आवश्यकता मूलतः कुन बिन्दुसम्म लाने भन्ने कुरा नीतिगत प्रश्न हो र यस्ता नीतिगत कुराहरू नीति विशेषज्ञले नै निर्णय गर्ने हो, यस्तो पक्षमा न्यायिक हस्तक्षेप उचित मान्न नसकिने ।

समावेशी भन्ने कुरा संगठनको रणनीतिअनुसार हुने हो । खुल्ला प्रतियोगिताद्वारा पदपूर्ति गर्दा समावेशी सिद्धान्तलाई मान्यता दिइसकेको अवस्थामा बहुवापिच्छे समावेशी खोज्ने होइन, यस्तो कुरा संविधानले व्यवस्था गर्ने पनि होइन । सेवामा प्रवेश गर्दा दिइने समावेशीको सुविधा तहपिच्छे बहुवामा पनि पाउनु पर्छ भन्न नमिल्ने ।

निवेदक महिला होइन, निजले महिलाले जस्तो भेदभाव, हिंसा वा असमान व्यवहार घरभित्र वा बाहिर भोग्नु परेको हुँदैन । खुल्ला प्रतिस्पर्धात्मक आधारमा पदपूर्ति प्रक्रियामा निवेदकले भने जस्तो समानुपातिक प्रतिनिधित्व वा समावेशी आधारमा पदपूर्ति गर्ने व्यवस्था भई सकेको छ । यस आधारमा एक पटक छनौट भई प्रवेश गरेपछि संगठनभित्र संख्यात्मक हिसाबले समावेशी समीकरण कायम गर्ने तथा प्रगतिशील विकास हुँदै जाने कुरा बुझ्न सकिन्छ । एक बिन्दुमा पूर्ण समानुपातिक समावेशी समीकरण सिर्जना भएपछि संगठनको आवश्यकता र व्यक्तिको आफ्नो विकास

क्षमताको आधारमा तहगत रूपमा स्तरवृद्धि हुँदै जाने ।

पदसोपानको हरेक बिन्दुमा सम्पूर्ण वर्ग वा समुदायलाई समानुपातिक समावेशी कायम गर्ने कुनै संवैधानिक वा कानूनी प्रत्याभूति हुन सक्दैन । न त्यो व्यवहारिक हुन्छ । वृत्ति विकासको हिसाबले संगठनभित्र उचित अवसरको माग गर्नु एउटा कुरा हो, तर हरेक तह वा पदमा समावेशी समानुपातिक माग गर्नु संगठनको आवश्यकता र नीतिविपरीत समेत हुन जान्छ । निवेदकले कम्पनीको नीतिगत व्यवस्थाविपरीत अन्यथा हुने गरी विद्यमान कानूनविपरीत आफ्नो बहुवाको माग समेत गरी अमूक ऐनमा भएको व्यवस्थाबमोजिम आफू कार्यरत कम्पनीको विनियमावलीको व्यवस्था संशोधनको आदेश माग गरेको अवस्थामा मागबमोजिम परमादेशको आदेश जारी गर्न नहुने ।

इजलास अधिकृत : पुनाराम खनाल

कम्प्युटर : मुकुन्द बिष्ट

इति संवत् २०६७ साल जेठ २० गते रोज ५ शुभम् ।

पूर्ण इजलास

१

मा.न्या.श्री तपबहादुर मगर, मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री प्रकाश बस्ती, रि.पु.इ.नं. ०६६-WF-०००२, परमादेश समेत, सुमित्रा हाडा वि. लोकसेवा आयोग समेत

स्थायी नियुक्ति पाई न्यूनतम् सेवा अवधि पूरा गरेको व्यक्तिले मात्र बहुवा प्रयोजनको लागि आफ्नो अस्थायी सेवा अवधिबापतको अङ्क पाउनु पर्ने दावी गर्नसक्ने हुन्छ । तर, न्यूनतम् सेवा अवधि नै अस्थायी सेवा अवधिलाई जोडेर पूरा भएको मात्र पर्ने तर्कको कानूनी आधार देखिँदैन । त्यस बाहेक यी निवेदिकाले आफ्नो अस्थायी सेवा अवधिलाई कानूनले निर्धारण गरेको प्रक्रियाअन्तर्गत जोडाउने कार्य नै नगरेको अवस्थामा निजले अस्थायी नियुक्ति पाई सेवा गरेको अवधिको कानूनी अस्तित्व नै समाप्त भैसकेको हुँदा त्यसमा थप विवेचना र विश्लेषणको आवश्यकता नदेखिने ।

इजलास अधिकृत: उमेश कोइराला
इति संवत् २०६७ असार १७ गते रोज ५ शुभम् ।

२

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा, मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय, फौ.पु.इ.नं. २०६६-CF-००५, कर्तव्य ज्यान, हिराकाजी हमाल वि. नेपाल सरकार

ज्यानसम्बन्धी मुद्दाहरूमा आवेशको अवस्थालाई अपराधको गाम्भीर्यता घटाउने परिस्थितिको रूपमा लिइने हुँदा यस्तो हत्यालाई मनसाय प्रेरित हत्याको वर्गमा राखेर हेरिएको पाइँदैन । यस्तो हत्यामा प्रतिवादीमा पीडितउपर आक्रमण गर्ने उत्प्रेरणा भने तत्काल जागृत भएको हुन्छ । आवेशको उत्तेजनामा गरिने कार्यमा कर्ताले त्यसबाट उत्पन्न हुने परिणामको ख्याल नगर्ने र त्यससम्बन्धमा कुनै सोच विचार समेत नगर्ने हुँदा आवेशको अवस्थालाई तात्कालिक भावावेश वा उत्तेजनाको रूपमा लिनुपर्ने हुन्छ । यस्तो आवेश वा त्यस्तो उत्तेजना मृतकको क्रियाकलापबाट वा निजसँग अन्योन्याश्रित क्रियाकलापबाट प्रतिवादीको मानसिकतामा तत्काल सिर्जित गराएको हुनुपर्ने ।

आवेशपूर्ण उत्तेजना प्रतिवादीको नियन्त्रण बाहिर हुनुपर्छ । यस्तो उत्तेजना प्रतिवादीको नियन्त्रण बाहिर थियो कि थिएन भन्ने कुराको निर्धारण गणितीय सूत्रको प्रयोग गर्न नसकिए पनि यो कुनै खास घटना, परिस्थिति, मानवीय संवेदनशीलता, मृतक र प्रतिवादीबीचको सम्बन्ध, मृतक र प्रतिवादीबीचको व्यवहारजस्ता केही खास कुराहरू सहयोगी हुन्छन् तथापि पीडितको क्रियाकलापबाट प्रतिवादी उत्तेजित भएको अवस्था भए पनि त्यो उत्तेजना शान्त भएको अवस्था छ भने वा मृतकले आफूलाई उत्तेजित पारोस् भन्ने उद्देश्यले प्रतिवादीले पहिले आफैँले मृतकलाई केही गर्दा प्रतिवादी आवेशमा आएको अवस्था छ भने पनि त्यस्तो अवस्थालाई ज्यानसम्बन्धी मुद्दामा आवेशपूर्ण अवस्थाको रूपमा नहेरी प्रतिवादी स्वयंले सिर्जना गरेको आवेश (Self-induced provocation) को रूपमा लिइने ।

इजलास अधिकृत : दीपककुमार दाहाल

कम्प्युटर : विपनादेवी मल्ल
इति संवत् २०६६ साल चैत १२ गते रोज ५ शुभम् ।

३

मा.न्या.श्री रामकुमारप्रसाद शाह, मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय र मा.न्या.श्री प्रकाश बस्ती, २०६६ सालको पुनरावलोकन (NF) नं. ००३, उत्प्रेषण, रामप्रसाद भट्टराई वि. भन्सार कार्यालय कैलाली समेत

अनधिकृत अधिकारीबाट एउटा विषयमा कारवाही प्रारम्भ गरी अर्कै विषयमा विभागीय सजायको आदेश दिनु भनी निर्णय समेत गरी दिइएको निर्देशनलाई सिरान हाली आफूले कुनै स्पष्टीकरण र सफाइको मौका नै नदिई कुनै निर्णयाधार नबोली पाँच वर्ष बढुवा रोक्का गर्ने विभागीय सजाय दिन पाउने अधिकारै नभएको विपक्षी निमित्त प्रमुख भन्सार अधिकृतबाट मिति २०६३।७।१२ मा भएको निर्णय र सो निर्णयउपर परेको पुनरावेदनमा शुरूको निर्णय मिले नमिलेको सम्बन्धमा न्यायिक मनको प्रयोग गरी कुनै आधार र कारण उल्लेख नै नगरी निर्णयकर्ता स्वयंले स्वतन्त्र भई निर्णय नगरी तह-तहबाट उठेको टिप्पणी सदर गर्ने गरी भएको विपक्षी महानिर्देशकको मिति २०६३।९।१९ को पुनरावेदन निर्णय समेत गैरकानूनी र यस अदालतबाट प्रतिपादित सिद्धान्तअनुकूल देखिएन । तसर्थ रिट निवेदन खारेज हुने गरी यस अदालतबाट भएको मिति २०६५।३।३३ को आदेश सो हदसम्म कायम रहन नसक्ने हुँदा पुनरावलोकन भई निवेदकलाई पाँच वर्ष बढुवा रोक्का गर्नु भनी भन्सार विभागबाट मिति २०६३।५।१६ मा दिइएको निर्देशनात्मक निर्णयका आधारमा निमित्त भन्सार अधिकृतले गरेको मिति २०६३।७।१२ को निर्णय तथा सोलाई सदर गर्ने गरी भन्सार विभागका महानिर्देशकबाट भएको मिति २०६३।९।१९ को पुनरावेदकीय निर्णय समेतका सम्पूर्ण काम कारवाही समेत उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर हुने ।

इजलास अधिकृत : नारायण सुवेदी
इति संवत् २०६६ साल फागुन २० गते रोज ५ शुभम् ।

संयुक्त इजलास

१

सं.प्र.न्या. श्री रामप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा, रि.नं.०६६-WH-००६६, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, माइली तामाङ्ग वि. ललितपुर जिल्ला अदालत समेत लागू औषध मुद्दामा तत्काल प्राप्त प्रमाणहरूको विद्यमानता र मूल्याङ्कनबाट पुर्पक्षको निमित्त थुनामा राखिएका, सो आदेश स्वयं बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गर्ने अख्तियारी भएको पुनरावेदन तहको अदालतबाट बेरीतको नभएको भन्ने ठहर भएको, प्रस्तुत निवेदनमा लागू औषध बरामद नै नभएको र अदालतमा इन्कारी बयान गरे पनि पुर्पक्षको लागि थुनामा राखिएको भनी लिइएका जिकीरहरू सो लागू औषध मुद्दामा अन्तिम निर्णय हुँदाका बखत विवेचना तथा निरोपण हुनुपर्ने प्रकृतिका देखिएकोले साधिकार अदालतमा विचाराधीन मुद्दामा प्रत्यक्ष असर पर्ने गरी बन्दीप्रत्यक्षीकरणको निवेदनबाट यस अदालतले हस्तक्षेप गर्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : नारायण सुवेदी
इति संवत् २०६७ असार ३२ गते रोज ६ शुभम् ।

२

स.प्र.न्या. श्री रामप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, २०६२ सालको फौ.पु.नं. ३३९३, कुटपीट, अंगभंग, नेपाल सरकार वि. गणेशराम खर्बुजा समेत घाइते वा पीडितका लागि पहिलो आवश्यकता उपचार हुन्छ । पीडितलाई तत्कालै नेपाल आँखा अस्पताल त्रिपुरेश्वर पुऱ्याइएको छ । अस्पतालले पीडितको अस्वस्थालाई गम्भीर रूपमा लिई शल्यक्रिया गरेको छ । यस्तो अवस्थामा कुटपीटको २० नं. अनुसार पहिले प्रहरी वा गा.वि.स. वा नगरपालिकाका वा सम्बन्धित मुद्दा हेर्ने अड्डामा जँचाउनु पर्ने अनि यी निकायले नजिकको सरकारी अस्पताल वा डिस्पेन्सरीमा पठाई जँचाउनु पर्ने जस्ता पुरातन प्रक्रियाको सीमामा

रुमलिइरहनु पर्ने आवश्यकता छैन । कृत्रिम घा चोट प्रकट नहुन् र असत्यताले प्रवेश नआओस् भन्ने कुरामा न्यायकर्ता संवेदनशील हुनु पर्दछ । तर, सुविधासम्पन्न सार्वजनिक अस्पतालका अभिलेखलाई अमान्य घोषित गर्नु कुटपीटको २० नं. को मनसाय होइन । कानूनको व्याख्या र प्रयोग समय सापेक्ष रूपमा गरिनु पर्दछ । समयको परिवर्तन, विज्ञान र प्रविधिको विकास र सामाजिक रुपान्तरणलाई पनि कानूनले ठाउँ दिएसम्म लचिलो रूपमा व्याख्या गर्दै आत्मसात् गर्दै जानु पर्ने ।

२०६०।११।२ को वारदातलाई लिएर २०६०।११।११ मा जाहेरी पऱ्यो भन्दैमा प्रतिवादीलाई सफाइ दिने आधार बन्दैन । ढिलो जाहेरी पर्दा जाहेरवालाले असत्य तथ्यहरू समावेश गर्ने वा कसैसँग रिसइवी साँध्न सक्ने सम्भावनालाई नकार्न सकिँदैन । तर, घटना र वारदातलाई स्वतन्त्र प्रमाणहरूले पुष्टि गरिरहेका छन् तथा सार्वजनिक निकायका अभिलेखले समर्थन गरिरहेका छन् भने जाहेरीको ९ दिनको ढिलाई नै प्रतिवादीले सफाइ पाउने आधार बन्न नसक्ने ।

इजलास अधिकृत : उमेश कोइराला
कम्प्युटर : सुन्दर कार्की
इति संवत् २०६७ साल जेठ १७ गते रोज २ शुभम् ।

इजलास नं. १

१

मा.न्या.श्री खिलराज रेग्मी र मा.न्या.श्री गौरी ढकाल, २०६५ सालको रिट नं. ०५०७ (नि.नं. ०१४४), उत्प्रेषण, नुमाकान्त खरेल वि. सामान्य प्रशासन मन्त्रालय समेत

कति समयलाई बिलम्ब मान्ने भन्ने विषय सम्बन्धित मुद्दाको अवस्था, परिस्थिति र सम्बन्धित पक्षले उपचार प्राप्त गर्ने क्रममा देखाएको क्रियाशील तथा वा उदासीनता जस्ता कुराहरूको विश्लेषणका आधारमा निश्चित गरिन्छ । सम्बन्धित पक्ष उपचार प्राप्त गर्ने सिलसिलामा क्रियाशील भए पनि उसले उपयुक्त कानूनी मार्ग अवलम्बन गरेको छ वा गलत मार्ग अवलम्बन गरेको छ भन्ने विषयले

पनि बिलम्बको समयावधि निर्धारण गर्न महत्वपूर्ण तत्वको भूमिका खेल्ने ।

आफूलाई वास्तविक रूपमा अन्याय परेको महसूस गर्ने व्यक्तिले एउटा युक्तिसंगत समयावधि भित्र कानूनबमोजिम अधिकार प्राप्त सम्बन्धित निकायहरूमा उपचारको लागि प्रवेश गरी सक्नुपर्छ । निवेदक जस्तो सेवामा रहेको निजामती कर्मचारीले आफ्नो अनिवार्य अवकाश हुने पत्र कानूनबमोजिम अभिलेख राख्ने निकायबाट प्राप्त भैसकेपछि त्यसबाट अन्याय भएको आफूलाई लाग्छ, भने समयमै कानूनी उपचारको माग गरी आउनु पर्नेमा त्यसो नगरी आफू कार्यरत रहेकै क्षेत्राधिकारविहीन कार्यालयमा निवेदन दिने, सो कार्यालयबाट निजामती किताबखानामा पत्राचार गराउनेसम्मको काम गरेर झण्डै तीन वर्षको समयावधि व्यतीत गरेको देखिन्छ । यसबाट निवेदकले आफ्नो कानूनी हकको प्रचलनको लागि उचित कानूनी प्रक्रिया अपनाएको र न्यायिक रूपले क्रियाशील हुने क्रममा समय व्यतीत गरेको भनी मान्न मिल्ने देखिएन । यसरी निवेदकले उचित न्यायिक निकायभन्दा अन्यत्र निवेदन दिई कारवाही चलाएको कारणले भएको ढिलाईलाई मुनासिब मान्न नसकिने ।

अनिवार्य अवकाश दिनु भनी विपक्षी निजामती किताबखानाले लेखेको पत्र र सो पत्रका आधारमा भए गरेका काम कारवाही बदर गरिपाउँ भनी निवेदक अनुचित बिलम्ब गरी यस अदालतमा प्रवेश गर्न आएको देखिँदा निवेदन मागबमोजिम आदेश जारी गर्नुपर्ने अवस्थाको विद्यमानता देखिन नआएकोले प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत : कृष्णमुरारी शिवाकाटी
कम्प्युटर : सरस्वती पौडेल

इति संवत् २०६७ साल जेठ १८ गते रोज ३ शुभम्

२

मा.न्या.श्री खिलराज रेग्मी र मा.न्या.श्री गौरी ढकाल, २०६० सालको दे.पु.नं. ८७६७, परमादेश, कुसुमीदेवी यादव वि. जिल्ला विकास समिति साभा विकास शाखा धनुषा समेत

पहिलेदेखि नै जेथा जमानी एवं ऋणवापत रोक्का रहेको जग्गामा अंश मुद्दाको फैसलाबमोजिम बण्डा पाउँदैमा सो कार्यले कानूनअनुरूप राखिएको रोक्कालाई प्रत्यक्ष असर पर्ने अवस्था एकातिर देखिँदैन भने अर्कोतर्फ ऋण एवं जमानीको दायित्व पूरा नगरी सोको सुरक्षणवापत राखिएको जग्गा स्वतः फुकुवा हुनुपर्छ भनी जिकीर लिनु कानूनसम्मत नहुने भएकाले निवेदन दावीको जग्गा रोक्का राख्नुको प्रयोजन समाप्त भएपछि मात्र रोक्का फुकुवा हुने ।

इजलास अधिकृत : कृष्णप्रसाद सुवेदी

इति संवत् २०६६ साल पुस २७ गते रोज २ शुभम् ।

- यसमा यसै लगाउको २०६० सालको दे.पु.नं. ८७६६, परमादेश, कुसुमीदेवी यादव, वि. साभा विकास शाखा धनुषा समेत भएको मुद्दामा यसैअनुसार फैसला भएको छ ।

३

मा.न्या.श्री खिलराज रेग्मी र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय, २०६४ सालको फौ.पु.नं. ०५६३, ०५६२, ०४८५, लागू औषध खैरो हिरोइन, नेपाल सरकार वि. डबलबहादुर बम, दुर्गा श्रेष्ठ वि. नेपाल सरकार, डबलबहादुर बम वि. नेपाल सरकार

प्रतिवादी दुर्गा श्रेष्ठ र प्रतिवादी डबलबहादुर बमको लागू औषध ब्राउन सुगर ओसारपसार, सञ्चय, विक्री गर्ने कार्यमा समान सहभागिता एवं संलग्नता भएको देखिन आएकोले प्रतिवादी दुर्गा श्रेष्ठलाई कसूर कायम हुने । अर्का प्रतिवादी डबलबहादुर बमको हकमा शुरू फैसला केही उल्टी गरी मतियार कायम गरेको हदसम्म सो फैसला बदर भै निजलाई समेत लागू औषध नियन्त्रण ऐन, २०३३ को दफा (घ)(ड) र (च) को कसूरमा ऐ. ऐनको दफा १४(१)(छ)(३) बमोजिम रू. ५,००,०००- (पाँच लाख) जरीवाना र १५ वर्ष कैद हुने ।

इजलास अधिकृत : लीलाराज अधिकारी

कम्प्युटर: रामशरण तिमिल्सिना

इति संवत् २०६७ वैशाख ८ गते रोज ४ शुभम् ।

४

मा.न्या.श्री खिलराज रेग्मी र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, २०६३ सालको फौ.पु.नं. ०४०७, लागू

औषध खैरो हिरोइन, चन्दन शर्मा वि. नेपाल सरकार

लागू औषध यी प्रतिवादीले नै भारत रक्सौलबाट खरीद गरी ल्याई सेवन, सञ्चय र ओसारपसार, बिक्री गरेबाट यी प्रतिवादी चन्दन शर्माबाट तत्काल बरामद भएको परिधिभिन्न सीमित रही केवल ११.१२५ ग्राम मात्र लागू औषध खैरो हिरोइन सञ्चय, बिक्री, ओसारपसार खरीद बिक्री गरेको रहेछन् भनी भन्न मिल्ने नदेखिँदा अभियोग दावीबमोजिम कसूर गरेको ठहर्‍याई लागू औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १४(१) को (१) को (ड) र छ(२) बमोजिम सेवनतर्फ २ महिना कैद, अन्य निषेधित कार्य गरेतर्फ १० वर्ष कैद र रू.७५,०००/- जरीवाना हुने ।

इजलास अधिकृत : लीलाराज अधिकारी
कम्प्युटर: रामशरण तिमिल्सिना
इति संवत् २०६७ वैशाख ८ गते रोज ४ शुभम् ।

इजलास नं. २

१

मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री गौरी ढकाल, २०६६ सालको रिट नं. ०६६-WO-०४३९, परमादेश, चक्रवर्हादुर शकर वि. प्र.मं. तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत

मौलिक हकमध्ये पनि अति महत्वपूर्ण हकको रूपमा रहेको सम्पत्तिसम्बन्धी हकलाई निरपेक्ष नछाडी कानूनबमोजिम भोग गर्ने, बेचबिखन गर्ने र उपभोग गर्ने हकमा राखिएको देखिन्छ । Eminent domain अन्तर्गत राज्यले नागरिकहरूको अचल सम्पत्ति सार्वजनिक कामको लागि राज्यले प्राप्त गर्न सक्ने अधिकार राख्दछ । Eminent Domain अन्तर्गत राज्यले व्यक्तिको सम्पत्ति निजको सहमति बेगर नै लिन सक्ने अधिकार प्राप्त गर्दछ । तर, त्यसरी सम्पत्ति प्राप्त गर्दा सार्वजनिक हितको लागि मात्र प्राप्त गर्न सक्ने र उचित मुआब्जा/क्षतिपूर्ति दिनुपर्ने विधिशास्त्रीय र संवैधानिक मान्यता रहेकाले यसरी व्यक्तिको सम्पत्ति प्राप्त गर्दा वा राज्यले सार्वजनिक हितको लागि

प्रयोग गर्दा उचित क्षतिपूर्ति दिइनु पर्दछ भन्ने सम्पत्तिसम्बन्धी हकको चुरो कुरा रहनुका साथै उक्त कुरालाई हाम्रो संविधानले पनि मान्यता प्रदान गर्ने ।
इजलास अधिकृत : नारायणप्रसाद रेग्मी
कम्प्युटर : वेदना अधिकारी
इति संवत् २०६७ साल जेठ २० गते रोज ५ शुभम् ।

२

मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय, २०६४ सालको रिट नं. ०६४-WO-१०७४, परमादेश समेत, मीरा ढुंगाना वि. प्र.मं. तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत

कानूनी व्यवस्था, म्याद तामेलीमा आउने समस्यालगायतका कारणले फैसला कार्यान्वयन सरल भएको छैन । न्यायपालिकाको रणनीतिक योजना पनि फैसला कार्यान्वयनको विषय समावेश भएको देखिन्छ । धेरै पहिलादेखि फरार रहेका अभियुक्तहरूलाई पक्राउ गरेका उदाहरणहरू पनि छन् । यस अदालतमा फैसला कार्यान्वयन निर्देशनालय गठन भए पनि उद्देश्य राम्रो हुन सक्छ, तर जिल्ला जिल्लाको फैसला कार्यान्वयन पीडितको लागि निरर्थक भएकाले यसतर्फ यस अदालतको प्रशासन र रजिष्ट्रारको ध्यान गई कानूनी व्यवस्थामा नै पहिले सुधार हुनुपर्ने ।

यस अदालतले संविधानको धारा १०७(१) वा (२) वा (३) वा अन्य कुनै धारा वा कानूनअन्तर्गत दिएको आदेश वा निर्णय वा यस अदालतले गरेको कानूनको व्याख्या वा प्रतिपादन गरेको कानूनी सिद्धान्त वा नेपालका अन्य कुनै अदालतले दिएको आदेश वा गरेको फैसला शीघ्र कार्यान्वयन गर्न यो आदेश प्राप्त भएका मितिले १२० दिनभित्र प्रत्येक मन्त्रालयको कामको सम्बन्धमा आ-आफ्ना नाममा जारी भएको आदेश कार्यान्वयन गर्न एउटा प्रभावकारी संयन्त्र गठन गरी यस अदालतलाई जानकारी दिनु । गठन गरिने त्यस्तो संयन्त्रलाई organizational chart मा समावेश गरी कानूनी अस्तित्व स्थापना गर्नु र नेपाल सरकारले आवश्यक निर्णय गरी संयन्त्रको काम कर्तव्य फैसला कार्यान्वयन गर्न तोक्नु भनी

प्रत्येक मन्त्रालयको सचिवको नाममा यो निर्देशनात्मक आदेश जारी हुने ।

इजलास अधिकृत : नारायणप्रसाद रेग्मी

इति संवत् २०६६ साल मंसिर २२ गते रोज २ शुभम् ।

३

मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री अवधेशकुमार यादव, २०६४ सालको दे.पु.नं. ०१३९, १४०, अंश, रामरत्न मधैया वि. अर्जुनकुमार मधैया, अर्जुनकुमार मधैया वि. रामरत्न मधैया

शेषपछिको बकसपत्रको लिखत हुँदा यी प्रतिवादीले एकासगोलमा रहे भएको व्यक्तिले तत्काल निजको स्वआर्जन वा आफूखुस गर्न पाउने सम्पत्तिमा मात्र आफूखुस हुने र आफ्नो यो यति घर जग्गा दिएको भन्ने समेत व्यहोरा उक्त शेषपछिको बकसपत्रमा उल्लेख भएको नदेखिँदा सो बकसपत्रअनुसार यी पुनरावेदक प्रतिवादीको अंश भाग मात्र छुट्ट्याई निजले पाउने भन्न कानूनसम्मत नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : परशुराम भट्टराई

इति संवत् २०६६ साल पुस २९ गते रोज ४ शुभम् ।

४

मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री अवधेशकुमार यादव, २०६४ सालको दे.पु.नं. ०१३८, निर्णय बदर, हक कायम, दाखेल खारेज समेत, रामरत्न मधैया वि. अर्जुनकुमार मधैया

अंशमा पर्ने जति अचल छुट्ट्याई लिन पाउनेका लागि प्रचलित नेपाल कानूनको व्यवस्था पनि हेर्नुपर्ने हुन्छ । अंश छुट्ट्याउदा कायम रहेको अंशियारको संख्या जति मात्र अंश भाग लाग्ने कुरा कानूनतः मान्नु पर्ने हुन्छ । प्रस्तुत मुद्दामा ३ अंशियार कायम भएकोमा विवाद छैन । सगोलमै रहेका व्यक्तिमध्ये एउटालाई आफ्नो शेषपछि आफ्नो एकलौटी हक पुग्ने सम्पत्ति शेषपछिको बकसपत्र गरी दिएको देखिँदा व्यवहारबाट यी वादी प्रतिवादीको आमा गंगादेवीले कुनै भाईलाई पाखा र कुनै भाईलाई काखा गरेको देखिँदा सो बकसपत्र स्वतः निष्क्रिय मान्नु पर्ने ।

इजलास अधिकृत : परशुराम भट्टराई

कम्प्युटर : विश्वराज पोखरेल

इति संवत् २०६६ साल पुस २९ गते रोज ४ शुभम् ।

५

मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६४ सालको रिट नं. १०६०, परमादेश, नरेन्द्रराज श्रेष्ठ समेत वि. भूमिसुधार कार्यालय भक्तपुर समेत

आफूले कारवाही अगाडि बढाइरहेको भन्नेसम्म लिखित जवाफ दिएको देखिँदा उक्त कारवाही के कति कारणले पूर्ण रूपमा सम्पन्न हुन नसकेको हो भन्ने देखिँदैन । कुनै साधिकार निकायले आफूले सम्पादन गर्नुपर्ने कारवाही अगाडि बढाएपछि मनासिव कारणबाहेक निर्णय नगरी रोक्नु हुँदैन । त्यसरी अनिश्चित समयसम्म बिना कारण आफूले गर्नुपर्ने निर्णय नगरी रोकी रहनुबाट कानूनको शासनको उपहास हुन जाने हुँदा ९० दिनभित्र कानूनबमोजिम निर्णय गरी दिनु भनी परमादेशको आदेश जारी हुने ।

इजलास अधिकृत : उपेन्द्रप्रसाद गौतम

इति संवत् २०४७ साल साउन २४ गते रोज २ शुभम् ।

६

मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६४-WO-१११०, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, नम्रता कुँवर के.सी. वि. गायत्री के.सी. समेत

आफ्नो हकको अंश जति आफूखुस गर्न पाउने कानूनी व्यवस्था र नजीर सिद्धान्तबमोजिम तीर्थकुमारीले नम्रता कुँवर के.सी. लाई शेषपछिको बकसपत्रको लिखत गरिदिएको र बकस दिने तीर्थ कुमारीको मृत्यु भइसकेको देखिँदा उक्त लिखतबमोजिम तीर्थकुमारीको अंशहकको जग्गा स्वतः नम्रता के.सी.को हुने देखिन आयो । यस्तो स्थितिमा तीर्थकुमारीको अंश भागमा जग्गा समेत गायत्री के.सी.लाई बण्डा छुट्ट्याउने गरी जिल्ला अदालत र पुनरावेदन अदालतबाट भएको आदेश र सो आदेशबमोजिम बण्डा छुट्ट्याउने सम्बन्धमा भएका यावत काम कारवाही उक्त कानूनी व्यवस्थाको त्रुटिपूर्ण देखिँदा उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर हुने ।

इजलास अधिकृत : कमलराज बिष्ट

कम्प्युटर : निर्मला भट्ट

इति संवत् २०६६ साल चैत १८ गते रोज ४ शुभम् ।

इजलास नं. ३

१

मा.न्या.श्री तपबहादुर मगर र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय, २०६५ सालको रिट नं ०६५-WO-०५५२, परमादेश, धनपति सापकोटा समेत वि. काठमाडौं महानगरपालिका समेत

निवेदकहरू महानगरपालिकाले नियुक्त गरेका नगर प्रहरी भएको हुँदा निजहरूको हकमा प्रहरी ऐन, २०१२ तथा प्रहरी नियमावली, २०४८ लागू नहुने भै स्थानीय स्वायत्त शासन ऐन, २०५५ तथा स्थानीय स्वायत्त शासन नियमावली, २०५६ मा उल्लेख गरेको व्यवस्थाअनुरूप नै हुने ।

इजलास अधिकृत : महेन्द्रप्रसाद पोखरेल
कम्प्युटर सुदिप पंजानी
इति संवत् २०६६ साल चैत २५ गते रोज ४ शुभम् ।

२

मा.न्या.श्री तपबहादुर मगर र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की, ०६४-WO-१०१४, उत्प्रेषण परमादेश, राजकिशोर यादव वि. निजामती किताबखाना समेत

निवेदकले नै पेश गरेको नागरिकताको प्रमाणित प्रतिलिपिबाट निजको उमेर २०२४ सालमा नै २० वर्षको भन्ने देखिँदा निजामती सेवा ऐन, २०४९ को दफा ३३(३) र निजामती सेवा नियमावली २०५० को नियम १०२क को उपनियम (२)(क) बमोजिम निवेदकले मिति २०६७/१२/२४ सम्म थप समय पाउने अवस्था नदेखिँदा निवेदन मागबमोजिम विपक्षीका नाममा उत्प्रेषण परमादेशको आदेश जारी गर्नुपर्ने नदेखिने ।

इजलास अधिकृत : महेन्द्रप्रसाद पोखरेल
कम्प्युटर : सुदिप पंजानी
इति संवत् २०६६ साल फागुन १८ गते रोज ३ शुभम् ।

३

मा.न्या.श्री तपबहादुर मगर र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, २०६१ सालको दे.पु.नं. ९९२८, लेनदेन, जयप्रकाश यादव वि. चण्डीप्रसाद भगत

राष्ट्रिय विधि विज्ञान प्रयोगशालाका विशेषज्ञले लाप्चे छाप लागेपछि लिखत लेखिएको

भन्ने राय दिएको कुरालाई बकपत्रको माध्यमबाट समर्थन जनाएको अवस्था नभए पनि विवादित लिखतलाई इजलासबाट नाङ्गो आँखाले अवलोकन गर्दा लिखत ल्याप्चे छापमाथि लेखिएको अर्थात् लिफामा खडा भएको अवस्था स्पष्ट देखिन आउँछ । यसको साथै लिखतको अन्त्यमा लेखिएको मितिमा रोजको अङ्क सच्याई ६ बनाइएको देखिएको र सो सच्याइएको ठाउँमा मुलुकी ऐन, कागज जाँचको महलअनुरूप सम्बन्धित कारणीको सहीछाप भई सो सच्याइएको पुष्टि गरेको समेत नदेखिएको हुँदा त्यस्तो विवादास्पद लिखतबाट लेनदेन भएको ठानी दावीबमोजिम साँवा ब्याज भराउनु न्यायसंगत नदेखिने ।

इजलास अधिकृत : कम्प्युटर : दीपककुमार दाहाल
कम्प्युटर : निर्मला भट्ट
इति संवत् २०६६ साल चैत २४ गते रोज ३ शुभम् ।

४

मा.न्या.श्री तपबहादुर मगर र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, २०६२ सालको दे.पु.नं. ९७५५, निर्णय बदर, सुर्जीदेवी भागड वि. भुवनकुमारी बस्नेत

पुनरावेदक वादी जग्गा कमाउन छाडी भागी बेपत्ता भएको अवस्था भएमा भूमिसम्बन्धी ऐन, २०२१ को दफा २६(१) (ग) बमोजिमको कारवाही चलाउँदा सो ठहरेमा मात्र मोहीको लगत अभिलेखबाट कट्टा गर्न सकिने हुन्छ । प्रतिवादीले विवादित जग्गाको मोही देखिएका वादीले जग्गा कमाउन छाडी भागी बेपत्ता भएको भनी कारवाही चलाएको देखिँदैन । साविकदेखिको विवादित जग्गाको मोही देखिएका यी वादीका विरुद्धमा भूमिसम्बन्धी ऐन, २०२१ को दफा २६(१) (ग) बमोजिमको कारवाही नचलाएको र अन्य व्यक्तिको नाममा चलाएको कारवाहीमा पनि पुनरावेदक वादीलाई प्रतिरक्षाको मौका नदिएको अवस्थामा मिसिल संलग्न मौजुदा प्रमाणबाट विवादित जग्गाको वादीको मोहियानी हक समाप्त हुने अवस्था कानूनतः देखिन नआउने ।

इजलास अधिकृत : दीपककुमार दाहाल
कम्प्युटर : निर्मला भट्ट
इति संवत् २०६६ साल चैत २४ गते रोज ३ शुभम् ।

५

मा.न्या.श्री तपबहादुर मगर र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, २०५७ सालको दे.पु.नं. ७३००, अंश नामसारी, महाबली अहिर वि. भागी अहिर समेत

मुलुकी ऐनमा २०३४।१।२७ मा भएको सातौं संशोधनपूर्व सगोलका अंशियारले जे जसरी जुनसुकै माध्यमबाट सम्पत्ति आर्जन गरेको वा प्राप्त भएको अवस्था भए पनि त्यस्तो सम्पत्तिमा सबै अंशियारको अंश लाग्ने नै देखिन्छ। प्रतिवादीहरूले उखडाबाट प्राप्त निजी जग्गा भनी दावी गरे पनि सो जग्गा निजी अवधारणले नेपाल कानूनमा प्रवेश पाउनु अघि नै आर्जन गरिएको भन्ने देखिएको हुँदा उखडामा प्राप्त गरेको जग्गा बण्डा नलाग्ने भनी लिएको जिकीर मुनासिब नदेखिने।

मानो छुट्टिएको मिति पश्चात् प्र. पियारे अहिरको छोराहरूले जग्गा पारित गरी लिएको राजीनामाका छायाँप्रतिबाट देखिँदा मानो छुट्टिएको मितिपश्चात् खरीद भएका ती सम्पत्तिहरू सगोलको बण्डा लाग्ने सम्पत्ति देखिन नआउने।

इजलास अधिकृत : दीपककुमार दाहाल

कम्प्युटर : निर्मला भट्ट

इति संवत् २०६६ साल चैत २४ गते रोज ३ शुभम्।

इजलास नं. ४

१

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय, २०६३-WO-३०४९, उत्प्रेषण, छोटेलाल साह तेली वि. पुनरावेदन अदालत हेटौँडा समेत

लेनदेन मुद्दाको विगो भराउने सम्बन्धमा प्रतिवादीको जायजथा पर्याप्त मात्रामा खोजी गरिनुपर्ने, थुनामा राख्न पठाउनु पूर्व निजलाई आफ्नो पक्ष राख्ने मौका प्रदान गर्नुपर्ने समेतका स्थापित मान्यता तथा कानूनी व्यवस्थाको भावना र उद्देश्यविपरीत हुने गरी प्रतिवादीलाई थुनामा राख्न पठाउनु र सिधा खर्च धरौट राख्नुभन्दा अगावै प्रतिवादीका नाममा अचल सम्पत्ति कायम रहेको देखिएको अवस्थामा सिधा खर्च दाखेल गर्ने गरी

मिति २०६१।१।०।२८ मा निवेदन गरेका आधारमा प्रतिवादीका नाममा जायजथा कायम नभएको भनी पुनरावेदन अदालत हेटौँडाबाट मिति २०६२।०।२३ मा निवेदक प्रतिवादीलाई थुनामा राख्ने गरी भएको आदेश कानूनसम्मत नदेखिने।

इजलास अधिकृत : नारायणप्रसाद दाहाल

कम्प्युटर : विदुषी रायमाभी

इति संवत् २०६६ साल माघ १७ गते रोज १ शुभम्।

२

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा, २०६२ सालको रि.नं. ३१३४, उत्प्रेषण समेत, दामोदर दाहाल वि. हिमालयन बैंक मुख्य कार्यालय समेत

बैंकले ऋण प्रवाह गर्दा कसलाई ऋण प्रवाह गरेको हो, त्यसको असूल गर्ने पूर्वशर्तको रूपमा कसको कुन सम्पत्ति रोक्का गर्नुपर्ने हो भन्ने सामान्य हेक्कासम्म पनि नराखी एउटा पक्षलाई प्रवाह गरेको ऋणबापत अर्को असम्बन्धित व्यक्तिको सम्पत्ति रोक्का राख्ने गरेको कार्य विपक्षी बैंकको जिम्मेवारीपूर्ण कार्य हो भन्न सकिने अवस्था देखिँदैन र विपक्षी बैंकबाट त्यस्तो गैरजिम्मेवार कार्य हुन गएउपर निवेदकको निवेदन परेपछि विपक्षी बैंकले त्यसमा अन्य विषयहरूमा भन्दा बढी गम्भीरतापूर्वक सोच विचार गरी आफूबाट त्यस्तो गल्ती किन र कसरी हुन गएछ छानवीन (अनुसन्धान) गरी भूल र त्रुटि हुन गएको देखिएपछि भूलसुधार गरी प्रारम्भिकस्तरमा नै समस्याको समाधान गर्नुपर्नेमा उल्टै प्रस्तुत मुद्दा परेपछि अनावश्यक प्रतिवाद गरी आफ्नो गल्तीलाई ढाकछोप गर्ने कार्य कानूनको शासनको मान्यताविपरीत हुँदा जग्गावाला निवेदक दामोदर दाहालको मञ्जूरी बिना विपक्षी कोसेली टेक्सटाइलले लिएको ऋणबापत जग्गा अनियमित तवरबाट रोक्का राखेको र लिलाम गर्न मिति २०६२।०।३० को गोरखापत्रमा सूचना प्रकाशन गर्ने लगायतका कार्य गैरकानूनी र त्रुटिपूर्ण हुँदा उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर हुने।

इजलास अधिकृत : चुरामन खड्का

कम्प्युटर : विदुषी रायमाभी

इति संवत् २०६६ साल फागुन १९ गते रोज ४ शुभम्।

३

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा, २०६३ सालको WO-३५३८, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, देवीदत्त रावत क्षेत्री वि. पुनरावेदन अदालत, नेपालगञ्ज समेत

म्याद नाघी पर्न आएको विपक्षी पवनकुमार अग्रवालको विगोको दरखास्त दर्ता गरी कारवाही गर्न मिलेन भनी बाँके जिल्ला अदालतको २०६३।३।३१ को आदेशलाई बदर गर्ने पुनरावेदन अदालत नेपालगञ्जको मिति २०६३।१०।१४ को आदेश विगोमा दरखास्त दिनका लागि मुलुकी ऐन, दण्ड सजायको महलको ४२ नं. ले वा ऐनले तोकेको म्यादको व्याख्याको परिप्रेक्ष्यमा त्रुटिपूर्ण देखिई कायम रहन नसक्ने ।

इजलास अधिकृत : गायत्रीप्रसाद रेग्मी
इति संवत् २०६७ साल वैशाख ९ गते रोज ५ शुभम् ।

४

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री रणबहादुर बम, २०६३ सालको रि.नि.नं. ०१७२, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, अशोककुमार चौधरी वि. पुनरावेदन अदालत राजविराज समेत

मुद्दा माथि मुद्दा दायर गर्दै जाने र पछि परेका मुद्दाको कारणबाट अन्तिम भएको मुद्दाका फैसला कार्यान्वयनलाई रोक्दै जाने हो भने ढिलाइले न्यायलाई परास्त गर्दछ भन्ने न्यायिक मान्यतालाई आत्मसात गरेको ठहरिन पुग्दछ । साथै प्रस्तुत कि.नं. ५०९ को जग्गामा यी निवेदकको निर्विवाद हकभोग स्थापित नभैसकेको अवस्थामा फैसला कार्यान्वयनको कार्यलाई रिट क्षेत्रबाट हस्तक्षेप गर्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : चुरामन खड्का
कम्प्युटर : विदुषी रायमाभी
इति संवत् २०६६ साल फागुन १३ गते रोज ५ शुभम् ।

५

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री रणबहादुर बम, २०६३ सालको रिट नं. २८४९, उत्प्रेषण परमादेश समेत, रामदेव पन्त वि. मोतीकुमार श्रेष्ठ समेत

फैसला कार्यान्वयनमा सघाउ पुऱ्याउने पक्षलाई अदालतले रहरले वा इच्छाले थुनामा राख्दैन, बरू विशेष परिस्थितिमा फैसलाको मर्यादा राख्न अवलम्बन गरिने यो विशेष कानूनी प्रक्रिया हो । यसको अतिरिक्त समान्यतः फैसलाबमोजिम भरी पाउने लाखौंको विगोको माया मारी उल्टै सिधा खर्च दाखिल गरी पक्षलाई थुनामा राख्न व्यक्तिलाई रहर हुँदैन । यो एउटा अन्तिम उपायको रूपमा पक्षले अवलम्बन गर्ने मार्ग भएकाले कानूनबमोजिम विगो भराउने सिलसिलामा पुनरावेदन अदालत पोखराबाट मिति २०६३।६।१३ मा भएको आदेश समेतले निवेदकको हकाधिकारमा हनन् गरेको अवस्था नदेखिएकोले निवेदन माग दावीबमोजिम उपप्रेषणसहितको परमादेशको आदेश जारी गर्नु नपर्ने ।

इजलास अधिकृत : चुरामन खड्का
कम्प्युटर : विदुषी रायमाभी
इति संवत् २०६७ साल वैशाख ८ गते रोज ४ शुभम् ।

६

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल, ०६४-CI-८८२, निषेधाज्ञा, सुजिल लाल प्रधानाङ्ग समेत वि. भुवनेश्वरी प्रधानाङ्ग समेत

निवेदकहरू र विपक्षीहरू एकासगोलको अंशियार देखिएको र काठमाडौं जिल्ला अदालतमा अंश मुद्दा परी मिति २०६३।३।१६ मा बण्डा हुने ठहरी फैसला भैसकेको अवस्थामा सो फैसलाबमोजिम हुने नै हुँदा कि.नं. १९९० को घरमा बस्न /पस्नबाट निवेदकहरूलाई नरोक्नु, रोक्न नलगाउनु भनी विपक्षीहरूको नाउँमा निषेधाज्ञाको आदेश जारी हुने ।

इजलास अधिकृत: गायत्रीप्रसाद रेग्मी
कम्प्युटर : सुदीप पंजानी
इति संवत् २०६७ साल असार ३१ गते रोज ५ शुभम् ।

७

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल, ०६५-CI-५४६, निषेधाज्ञा, ईश्वर सिंह महर्जन वि. काजीलाल महर्जन समेत

निवेदकको सम्बन्धित जिल्लामा विपक्षीमध्येका काजीलाल महर्जन समेतलाई

प्रतिवादी बनाई दिएको दाखेल खारेज निर्णय बढर मुद्दा कारवाहीयुक्त अवस्थामा रहेको भन्ने निवेदक स्वयंले दिएको निवेदनबाट देखिएकोमा सो मुद्दा ठहरेबमोजिम हुने नै हुँदा फैसला कार्यान्वयनको सिलसिलामा हाल निवेदन मागबमोजिम निषेधाज्ञाको आदेश जारी गर्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत: गायत्रीप्रसाद रेग्मी
कम्प्युटर : सुदीप पंजानी

इति संवत् २०६७ साल असार ३१ गते रोज ५ शुभम् ।

८

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल, ०६५-CI-७०२, निषेधाज्ञा, लैनबहादुर घर्ती वि. महानगरीय प्रहरी परिसर हनुमानढोका काठमाडौं समेत

प्रहरी कर्मचारी समेतको मद्दतले विपक्षीहरूको लेनदेनको विषयलाई लिएर धम्की दिएको भन्ने मुख्य जिकीर लिए पनि विपक्षीहरूले निवेदकहरूलाई कुनै पनि प्रकारको धम्की नदिएको भन्ने लिखित जवाफ रहनुका साथै निजका विरुद्धमा कुनै पनि उजुरी समेत पनि नआएको भन्ने व्यहोरा उल्लेख भएको पाइन्छ, र लेनदेनको विषयलाई लिएर उजुरी सुन्ने र कागज गराउने अधिकार प्रहरी कर्मचारीलाई नभएको अवस्थामा पुनरावेदकको मागबमोजिम निषेधाज्ञाको आदेश जारी गर्न मिल्ने अवस्थाको विद्यमानता रहेको नदेखिने ।

इजलास अधिकृत : गायत्रीप्रसाद रेग्मी
कम्प्युटर : सुदीप पंजानी

इति संवत् २०६७ असार ३१ गते रोज ५ शुभम् ।

९

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल, २०६३-CI-०३८९, परमादेश, नन्दकुमारी पौडेल वि. कोहलपुर नगर विकास समिति बाँके

पुनरावेदकको जग्गा अधिग्रहणमा परेका कारण विपक्षी समितिबाट निजलाई घडेरी जग्गा दिने निर्णय भएको, जग्गाबापत पहिलो किस्ता रकम बुझाई सकेकोमा बाँकी किस्ता बुझाउने सम्बन्धमा विपक्षी समितिबाट भएको थप निर्णयको जानकारी

निवेदकले थाहा पाएको प्रमाणित हुन नआएको, निवेदकलाई छुट्ट्याएको जग्गाको हकको स्थितिमा परिवर्तन नआई विपक्षी समितिकै नाउँमा रहेको, समितिलाई बुझाउनु पर्ने बाँकी किस्ता बुझाउनु निवेदक मञ्जुरी भएको अवस्थामा निवेदकबाट नियमानुसार बाँकी किस्ता रकम बुझ्न इन्कार गर्न कोहलपुर नगर विकास समितिले मिल्ने देखिन आउँदैन । पुनरावेदकबाट जग्गाको (घडेरी) बाँकी किस्ता रकम बुझ्ने सम्बन्धमा कोहलपुर नगर विकास समितिले उपयुक्त निर्णय गरी पुनरावेदकको नाउँमा निवेदनमा उल्लिखित प्लटिङभित्रको जग्गा उपलब्ध गराउनु भनी परमादेशको आदेश जारी हुने ।

इजलास अधिकृत : गायत्रीप्रसाद रेग्मी
कम्प्युटर : सरस्वती पौडेल

इति संवत् २०६७ साल असार ३१ गते रोज ५ शुभम् ।

१०

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री रामकुमारप्रसाद शाह, २०६२ सालको रिट नं. ३२६१, उत्प्रेषण, वृषबहादुर राई वि. शिक्षा तथा खेलकुद मन्त्रालय समेत

कर्तव्य ज्यान जस्तो फौजदारी कसूरमा अदालतबाट सजाय पाएको देखिएको अवस्थामा सो सजाय भुक्तान गरिसकेपश्चात् सो सजायलाई नैतिक पतन देखिने फौजदारी कसूरमा सजाय पाएको भनी आत्मसात् रूपमा व्याख्या गरी निजलाई शिक्षा ऐन, २०३८ को दफा १६ड को उपदफा (५) को खण्ड (ड) बमोजिम शिक्षक पदबाट बर्खास्त गरेको तथा सो गर्दा शिक्षा नियमावली २०५९ को नियम १४० बमोजिमको कार्यविधि पूरा नगरी सफाइको मौका नदिई शैक्षिक सेवाबाट बर्खास्त गर्ने गरेको देखिएकोले क्षेत्रीय शिक्षा निर्देशक धनकुटाको मिति २०६३।१।१४ को निर्णय र तत्सम्बन्धी काम कारवाही उक्त कानूनी व्यवस्थाप्रतिकूल हुने ।

इजलास अधिकृत : महेन्द्रप्रसाद पोखरेल
कम्प्युटर : सुदीप पंजानी

इति संवत् २०६७ साल असार १५ गते रोज ३ शुभम् ।

इजलास नं. ५

१

मा.न्या.श्री रामकुमारप्रसाद शाह र मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला, २०६४-CI-०८३५, रकम दिलाई पाऊँ, यज्ञप्रसाद बजगाई समेत वि. सूर्यनाथ बास्तोला समेत

पक्षहरूबीच भएको सम्झौता गर्ने पक्षहरूको लागि कानूनसरह बन्धनकारी हुने हुन्छ। सम्झौता वा करारमा नभएको कुनै दायित्व पक्षहरूउपर लागू हुन सक्दैन। सम्झौताका शर्तमा क्षतिपूर्ति भराई दिने भनी उल्लेख नभएको अवस्थामा तथा करार ऐन, २०५६ को दफा ८३(१) मा ब्याज भराई दिने व्यवस्था समेत नभएको स्थितिमा ब्याज भराई दिने गरेको देखिन्छ। यसरी सम्झौताको शर्त तथा करार ऐन, २०५६ को दफा ८३(१) प्रतिकूल ब्याज भराई दिन नमिले।

इजलास अधिकृत : नारायणप्रसाद दाहाल
कम्प्युटर : विदुषी रायमाभी
इति संवत् २०६६ साल चैत १९ गते रोज ५ शुभम्।

२

मा.न्या.श्री रामकुमारप्रसाद शाह र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, २०६२ सालको रि.नं. ३६९०, उत्प्रेषण मिश्रित परमादेश, गोपाल राजभण्डारी वि. कृषि विकास बैंक मुख्य कार्यालय समेत

कर्जा प्रवाह गर्दा वा धितो मूल्याङ्कन गर्दा निवेदक गोपाल राजभण्डारीले जानी जानी लापरवाही गरेको वा बैंकको कुनै नियम वा आदेश उल्लंघन गरेको महाप्रबन्धकको निर्णय समेतबाट नदेखिँदा आफ्नो कार्यसम्पादनको सिलसिलामा असल नियतले ऋण लगानी गरेको अवस्थामा ऋणीले सो ऋण नतिरे निज ऋणीबाट आफ्नो ऋण रकम असूल गर्नेतर्फ बैंक नियमबमोजिम धितो लिलाम गरी असूल गर्नुपर्नेमा प्रत्यर्थी बैंकले त्यसतर्फ कुनै कारवाही नै नगरी मिति २०५८।१०।१० मा अवकाश प्राप्त गरिसकेका निवेदकले अवकाश प्राप्त गरिसकेपछि पाउने सुविधा समेतका रकम रोक्का राख्न नमिले हुनाले उक्त मिति २०६१।८।२५ को महाप्रबन्धकबाट भएको

निर्णयमा क्षेत्राधिकारको त्रुटि देखिँदा सो निर्णय उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर हुने ठहर्छ। अब पहिला ऋणीबाट आफ्नो ऋण रकम असूलउपर गर्नेतर्फ जे जो गर्नुपर्ने गरी ६ महिनाभित्र कारवाही गरी असूलउपर गर्नु र असूल हुन नसके यी निवेदकबाट असूलउपर गर्नुपर्ने भए प्रचलित कानूनबमोजिमको कारवाही गरी असूलउपर गर्नु। सो नभए सातौं महिनामा निजले अवकाशपछि प्राप्त हुने रकम निवेदकलाई भुक्तानी दिनु भनी विपक्षीहरूका नाममा परमादेश समेत जारी हुने।

इजलास अधिकृत : श्रीप्रसाद सञ्जेल
कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन
इति संवत् २०६६ साल पुस २२ गते रोज ४ शुभम्।

इजलास नं. ६

१

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी, २०६४-WO-०५९३, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, अशोककुमार यादव वि. पुनरावेदन अदालत, राजविराज समेत

लेनदेनको विगो तिर्नु बुझाउनु पर्ने प्रथम दायित्व ऋणीको नै हुन्छ। ऋणीले कर्जा नबुझाएमा वा ऋणीको जेथाबाट विगो भरी भराउ गर्न नसकिने भएमा ऋणी बाहेकका अंशियारको सम्पत्तिबाट दण्ड सजायको २६ नं. समेत बमोजिम विगो भरी भराउको कारवाही गर्न मिल्दैन भनी ऋणीले अंशियारलाई ऋणको दायित्वबाट अलग राख्न नमिले।

बाबुले लिएको ऋणको हकमा यी निवेदकको समेत दायित्व रहने गरी निवेदकले लिलाम सकार गरी लिएको जग्गा रोक्का समेत गरी सो सम्पत्तिबाट समेत विगो भरी भराउ गर्ने गरी भएको काम कारवाहीबाट निवेदकको संविधानप्रदत्त हक अधिकारउपर बन्देज लागेको नदेखिँदा मागबमोजिमको आदेश जारी गर्न नमिले।

इजलास अधिकृत : रमेश ज्ञवाली
कम्प्युटर : रानु पौडेल
इति संवत् २०६६ साल पुस १७ गते रोज ६ शुभम्।

२

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा,
२०६३ सालको रिट नं. ३६२२, उत्प्रेषण, केशरकुमार
नेपाली वि. पुनरावेदन अदालत, हेटौँडा समेत

जबरजस्ती करणी जस्तो गम्भीर किसिमको
फौजदारी अपराध कायम भएपश्चात् पीडितलाई
पीडकबाट क्षतिपूर्तिस्वरूप आधा अंश भराई दिने
विषयलाई देवानी दायित्व भराउँदाको जस्तो अर्थात्
पक्षहरूले म्यादभित्र प्रक्रिया क्रियाशील बनाएको
अवस्थामा मात्र आकृष्ट हुने गरी तर्क गर्नु कानून र
न्यायको दृष्टिकोणबाट समेत उपयुक्त देखिँदैन ।
यस्ता मुद्दामा क्षतिपूर्ति पाउने विषय पीडित
शास्त्रको विषय हो । फौजदारी न्यायमा पीडितले
पाउने यस किसिमको हकलाई राज्यले उचित
सम्बोधन गर्नुपर्ने ।

पीडितका तर्फबाट न्यायालय स्वयं
पीडकबाट पीडितलाई क्षतिपूर्ति भराई दिन
अग्रसरता देखाउनु पर्ने अवस्थामा दण्ड सजायको
४६(१) नं. को म्याद नाघेको भनी अदालतले सो
विषयमा निर्णय दिन इन्कार गर्दा पीडितलाई भनै
पीडा थपिन गै न्यायको उद्देश्य नै परास्त हुन जाने
परिस्थिति आउन सक्ने हुँदा फैसलाको
कार्यान्वयनलाई परास्त गरी फैसलाको परिणाम नै
समाप्त गर्ने उद्देश्य राखी असाधारण
अधिकारक्षेत्रअन्तर्गत अदालत प्रवेश गरेकाले रिट
निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत : सुदीप दंगाल

कम्प्युटर : रानु पौडेल

इति संवत् २०६६ साल पुस २ गते रोज ५ शुभम् ।

३

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा,
२०६३-WO-०४६३, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, ईश्वरी
सिलवाल समेत वि. मन्त्रपरिषद्को कार्यालय समेत

ऐन कानूनको रीत पुऱ्याई यी
निवेदकहरूको घर जग्गा अधिग्रहण गरिएको
अवस्थामा त्यस्तो कार्यलाई गैरकानूनी भनी मात्र
समेत नमिल्ले ।

राज्यले सार्वजनिक कार्यको लागि जग्गा
अधिग्रहण गर्न कानूनद्वारा तोकिएको प्रक्रिया पूरा

गर्नुपर्ने हुन्छ र यसरी अधिग्रहण गर्दा अधिग्रहण
गरिएका जग्गाधनीले आफ्नो जग्गाबापतको मुआब्जा
प्राप्त गर्ने कार्य समेत एकैसाथ हुनुपर्ने हुन्छ ।
सार्वजनिक हितको लागि भनी जग्गा अधिग्रहण गरी
आफ्नो अधीनस्थ बनाउने तर सोबापतको मुआब्जा
प्राप्त नगर्दा जग्गाधनीले विभिन्न किसिमले नोक्सानी
व्यहोर्नु पर्ने ।

मुआब्जा रकम दिने सम्बन्धमा विवाद
समेत नदेखिएको भए पनि लामो समयसम्म
अधिग्रहण गरिएको जग्गाबापतको मुआब्जा यी
निवेदकहरूले वैकल्पिक व्यवस्था समेत गर्न सक्ने
देखिँदैन । जग्गा अधिग्रहण गर्ने सम्बन्धी सूचना
राजपत्रमा प्रकाशित गरी आफ्नो अधीनस्थ बनाई
आफूखुशी निर्णय गर्ने तर जग्गाधनीलाई चालू
वर्षहरूको आयस्ता प्राप्त गर्न वा सोको लाभदायक
वैकल्पिक उपयोग गर्नबाट रोक मात्र लगाउने
गर्नाले जग्गा प्राप्तकर्ता र जग्गादाता बीचको
सम्बन्ध असमन्यायिक हुन जान सक्दछ । यो एक
किसिमले राज्यको तर्फबाट आफ्नो हकको प्रधानता
कायम गर्ने आधार बनाउने चेष्टाको रूपमा लिन
सकिने ।

खुल्ला बजारमुखी अर्थतन्त्रमा आर्थिक
पक्षहरूले आ-आफ्नो सम्भावना र अवसरहरूका
आधारमा न्यूनतम निर्णय लिई बजारलाई प्रभावित
गर्न सक्दछ, तर राज्यले सार्वजनिक हितका निमित्त
प्रस्तुत जग्गा अधिग्रहण गर्ने वैधानिक प्रावधान गर्दा
पनि हकका धनीले मुनासिब क्षतिपूर्ति पाउने र
त्यस्तो भुक्तानीको प्रणाली, आर्थिक विधिहरू र
औचित्यको हिसाबले पनि तर्कसंगत र विवेकशील
हुनु जरूरी हुन्छ । यसरी अधिग्रहण गरी
जग्गाधनीको हकमा सीमा खडा पनि गर्ने र
सोबापत भुक्तानीको लागि मार्गप्रशस्त पनि नगर्ने
गरेको विपक्षीहरूको व्यवहारलाई कानूनी, आर्थिक,
सामाजिक एवं व्यावहारिक दृष्टिकोणले समेत
वाञ्छनीय मात्र नमिल्ले ।

इजलास अधिकृत : सुदीप दंगाल

कम्प्युटर : रानु पौडेल

इति संवत् २०६६ साल पुस २ गते रोज ५ शुभम् ।

- यसमा यस्तै प्रकृतिको २०६३-WO-०५२७, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, चिनी खत्री समेत वि. प्र.मं. तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत भएको मुद्दामा यसैअनुसार फैसला भएको छ।

४

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री अवधेशकुमार यादव, २०६४ सालको WO-०५४६, उत्प्रेषण समेत, गोपालदास कर्माचार्य वि. जिल्ला भूमिसुधार कार्यालय, भापा समेत

साविकको जग्गाधनीलाई जानकारी दिई कानूनबमोजिम भएको मोही नामसारीको निर्णयलाई पछि कायम भएका जग्गाधनी यी निवेदकले बदर गराउन वा अन्यथा भन्न मिल्ने नहुँदा आफूले लिएको जग्गाको मोही छ भन्ने कुरा जानी-जानी मोही लागेको जग्गा लिने निवेदकको हकमा मोहियानी हक नामसारी सम्बन्धमा भएको निर्णयले कुनै असर पुऱ्याउन सक्ने स्थिति आउँदैन । त्यसैगरी मोही नामसारी गर्न पाउने सक्षम निकायले गरेको निर्णयलाई कार्यान्वयनको चरणमा भए गरेका अन्य काम कारवाही समेतले असर पुऱ्याउन सक्ने समेत अवस्था आउन नसक्ने ।

इजलास अधिकृत : रमेश ज्ञवाली
कम्प्युटर : रानु पौडेल
इति संवत् २०६६ साल माघ २८ गते रोज ५ शुभम् ।

५

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री अवधेशकुमार यादव, २०६४ सालको WO-०५४७, उत्प्रेषण समेत, गोपालदास कर्माचार्य वि. जिल्ला भूमिसुधार कार्यालय, भापा समेत

कानूनबमोजिम जग्गा बाँडफाँडको निर्णय गर्न पाउने निकायले प्रचलित कानूनको अधीनमा रही बाँडफाँडको निर्णय गरेको देखिएकोमा सो निर्णयमा अधिकारक्षेत्रको त्रुटि वा कानूनी त्रुटि विद्यमान रहेको नदेखिँदा निवेदकको मागबमोजिम जग्गा बाँडफाँड गर्ने गरी भूमिसुधार कार्यालय भापाबाट भएको निर्णय बदर गर्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : रमेश ज्ञवाली
कम्प्युटर : रानु पौडेल
इति संवत् २०६६ साल माघ २८ गते रोज ५ शुभम् ।

६

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल, २०६३-WO-०५२६, उत्प्रेषण समेत, फेकन राउत गडेरी वि. लोकसेवा आयोग केन्द्रीय कार्यालय समेत

जुन पदमा बहुवाको जिकीर लिई प्रस्तुत निवेदन परेको हो सो पदमा निवेदकको बहुवा भई पदस्थापना समेत भई सकेको देखिँदा प्रस्तुत रिट निवेदनको कुनै औचित्य बाँकी रहेको पाइएन । तसर्थ, प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत : रमेश ज्ञवाली
कम्प्युटर : रानु पौडेल
इति संवत् २०६६ साल माघ २६ गते रोज ३ शुभम् ।

- यसमा यस्तै प्रकृतिको २०६३-WO-०५९४, उत्प्रेषण समेत, माधवराज सेढाई समेत वि. लोकसेवा आयोग केन्द्रीय कार्यालय समेत भएको मुद्दामा यसैअनुरूप फैसला भएको छ।

७

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६४ सालको CR-०१७९, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. गोरे साकी समेत

मृतकले खाएको रक्सीको पुरानो पैसा तिर्ने कुरामा तत्काल विवाद भई रक्सीको सुरमा अचानक उठेको वादविवादको क्रममा आवेशमा आई तत्काल उठेको रिसलाई नियन्त्रित गर्ने क्षमता गुमाएको अवस्थाका प्रतिवादीहरूले मृतकलाई लात मुक्का समेतले कुटपीट गरी सोही कुटाईबाट मृतकको मृत्यु भएको भन्ने देखिँदा प्रस्तुत वारदातको प्रकृति सोही महलको १४ नं. को दायराभित्रको कसूर अपराध पर्ने देखिएकोले सोहीबमोजिम सजाय हुने ।

इजलास अधिकृत : रमेशप्रसाद ज्ञवाली
इति संवत् २०६६ साल कात्तिक १७ गते रोज ३ शुभम् ।

८

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री रणबहादुर बम, २०६३ सालको रिट नं. ३३०३, उत्प्रेषण, भगवतीदेवी खोखाली वि. भूमिसुधार तथा व्यवस्था मन्त्रालय समेत

रावल आयोगले रोक्का राखे पनि जुन व्यहोराले रोक्का राखेको हो सो पुष्टि गर्न जो चाहिने कानूनी प्रक्रिया पूरा गरी टुङ्गो लगाउन पर्ने हुन्छ । यस प्रक्रियामा सम्बन्धित जग्गावाला समेतलाई भिकाई आफ्नो कुरा भन्ने मौका समेत दिनु पर्दछ । आयोगको रोक्का एवं प्रतिवेदनलाई नै न्यायिक निर्णयसह अन्तिम मानी व्यक्तिको कानूनबमोजिम सम्पत्ति दर्ता गरिपाउने वा भोग गर्न पाउने कुरालाई अनिश्चित कालसम्म प्रतिबन्धित अवस्थामा राख्न नमिल्ने ।

२०५२ सालको रावल आयोगको प्रतिवेदनका आधारमा राखिएको निवेदनको कि.नं. १५७ को जग्गा रोक्कालाई सदाको लागि रोक्काको रूपमा मात्रै अनिश्चित कालसम्म कायम नराखी आवश्यक कानूनी प्रक्रिया पूरा गरी हक दायित्वको स्थितिको टुङ्गो लगाई दिनु भनी विपक्षी भूमिसुधार तथा व्यवस्था मन्त्रालय एवं मालपोत कार्यालय समेतको नाममा परमादेशको आदेश जारी हुने ।

इजलास अधिकृत : विमल पौडेल

कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०६७ साल वैशाख २ गते रोज ५ शुभम् ।

९

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की, २०६४ सालको फौ.पु.नं. ६५३, कीर्ते, नजरूल शेष मियाँ वि. नेपाल सरकार

प्रतिवादी गुरुदेव साहू तेलीले अदालतसमक्षको बयानमा प्रतिवादी नजरूल मियाँले नागरिकता बनाउने मान्छे, खोज्छु कति पैसा दिन्छौ भन्दा मैले रू.१०,०००।- दिन्छु भनेपछि नरेन्द्र राजवंशीलाई मेरो घरमा ल्याई एक महिनाभित्र नागरिकता बनाई दिन्छु भनेपछि सोही दिन रू.२,०००।- र पटक पटक गरी ३ पटकमा रू.१०,०००।- लगी घरमै नागरिकता ल्याई दिएका हुन् भनी अदालतमा बयान गरेको व्यहोरालाई यी पुनरावेदक प्रतिवादीले खण्डन गर्ने गरी कुनै वस्तुनिष्ठ प्रमाण पेश गर्न सकेको देखिँदैन । नरेन्द्र राजवंशीलाई देखाई दिन्छु भन्ने व्यहोरालाई स्वीकार गरेका र प्रतिवादीमध्येका गुरुदेव साहू तेलीको पोललाई अन्यथा भन्न सकेको अवस्था विद्यमान

नहुँदा सहअभियुक्तको पोललाई आधार मानी भएको फैसला त्रुटिपूर्ण भन्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : विष्णुप्रसाद गौतम

कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०६७ साल जेठ ३१ गते रोज २ शुभम् ।

१०

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की, २०६५ सालको ०६५-CR-००७२, ज्यान मार्ने उद्योग, नेपाल सरकार वि. दीपेन भुजेल

प्रतिवादी दीपेन भुजेलले रविन के.सी.लाई कृटपीट गरेको तथ्य पुष्टि भैरहेको देखिँदा सरकारी मुद्दासम्बन्धी ऐन, २०४९ को दफा २७ बमोजिम सरोकारवालालाई वादी पक्ष कायम गर्न, वादीले मुद्दा सकार गरे सोहीबमोजिम कारवाही र किनारा गरी आदेश गर्नुपर्नेमा सो केही नगरी दावी नपुग्ने ठहर गरी गरेको शुरू ललितपुर जिल्ला अदालतको फैसलालाई सदर गर्ने गरी भएको पुनरावेदन अदालत पाटनको फैसला सो हदसम्म नमिली केही उल्टी हुने ।

इजलास अधिकृत : विष्णुप्रसाद गौतम

इति संवत् २०६७ साल जेठ ३१ गते रोज २ शुभम् ।

११

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, २०६६ सालको WO-००६४, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, वेदप्रसाद भूर्तेल समेत वि. पुनरावेदन अदालत, इलाम समेत

यस रिट निवेदनबाट निवेदकले उठाएका कानूनको प्रयोग उचित वा अनुचित के छ, कैदी पूर्जा कानूनसम्मत छ वा छैन भन्ने कुरा बोलिदिँदा यसै अदालतमा विचाराधीन पुनरावेदनको निर्णयलाई असर पर्न जाने ।

अदालतको फैसलाबमोजिम भएको भनी दिइएको कैदी पूर्जा र सोहीअनुरूप यी रिट निवेदकलाई थुनामा राखिएको कार्यलाई जुन मुद्दाको जरियाबाट निवेदकहरूलाई कैद ठेकिएको हो सो मुद्दा विचाराधीन नै रहेको अवस्थामा गैरकानूनी थुना भन्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : विष्णुप्रसाद गौतम

इति संवत् २०६७ साल साउन १३ गते रोज ५ शुभम् ।

१२

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६५ सालको ०६४-WO-१०६२, उत्प्रेषण, लक्ष्मीदास कथवनिया वि. भगवतदास समेत

मुद्दा पर्दा जग्गा रोक्का राख्नुको अर्थ फैसला कार्यान्वयन गर्दा उपयोगका लागि रोक्का राखिएको जग्गा उपयोग हुन नसक्ने भए त्यस्तो रोक्का निरर्थक बन्न जान्छ । त्यसैले रोक्काको उद्देश्य नै पराजीत हुने गरी फैसला कार्यान्वयनको प्रक्रियाबाट रोक्काको सम्पत्तिलाई बाहेक गर्न मिल्ने नदेखिने ।

लेनदेन मुद्दा चल्दा वा लिखत हुँदा अंशियारहरू सगोलमा देखिएको, ऋणीको बाबुको नामको सम्पत्ति रोक्का भएपछि बाबुले उक्त रोक्का बदर गराउन नसकेको समेत भै पुनरावेदन अदालतले मिति २०६३।०८।१५ को आदेशले कि.नं. २४१ को सम्पूर्ण सम्पत्तिबाट बिगो भरी पाउने गरी गरेको अन्तिम आदेशविपरीत त्यसरी अन्यथा आदेश गर्ने कानूनी आधार स्पष्ट नगरी सो विपरीत मिति २०६५।१२।२४ मा भएको आदेश कानूनसंगत तथा आफ्नो पूर्व निर्णयसंगत समेत नभएकोले उक्त आदेश उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर हुने ।

इजलास अधिकृत : विष्णुप्रसाद गौतम
कम्प्युटर : भवानी हुंगाना
इति संवत् २०६७ साल जेठ २१ गते रोज ६ शुभम् ।

१३

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६२ सालको रिट नं. २८०४, रमेशप्रसाद उत्प्रेषण, खरेल वि. जिल्ला शिक्षा कार्यालय काभ्रेपलाञ्चोक समेत

निवेदकले दावी गरेको पद अर्काको पदाधिकार रहेको पद भएको र शिक्षा नियमावली बमोजिम पदाधिकार रहेको पदमा स्थायी पदपूर्ति नभएसम्मको लागि जुनसुकै प्रकारबाट विद्यालयले पठन पाठनसम्बन्धी आवश्यक प्रवन्ध गर्नका लागि सम्म निवेदकलाई ६ महिनाका लागि अस्थायी शिक्षक पदमा अनुमति प्रदान गरी निजले अर्काको पदाधिकार रहेको पदमा अध्यापन गरेको देखिँदा त्यस्तो कानूनबमोजिम पूर्ति हुन सक्ने रिक्त पदलाई

आफ्नो पद भनी दावी गर्ने अधिकार समेत निवेदकलाई कुनै कानूनले प्रदान गरेको देखिएन । यसरी निवेदकले दावी गरेको पद अर्काको पदाधिकार रहेको हुँदा उक्त पदमा निजको निर्विवाद अधिकार छ भन्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : विष्णुप्रसाद गौतम
कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन
इति संवत् २०६७ साल असार २ गते रोज ४ शुभम् ।

१४

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६४ सालको WO-०७०५, उत्प्रेषण समेत, पुतली नानी श्रेष्ठ वि. कस्तुरी मैयाँ श्रेष्ठ समेत

अदालतबाट तह-तह हुँदै मुद्दाको अन्तिम फैसला समेत भै फैसलाअनुरूप सो फैसला कार्यान्वयनको रोहमा परेको कानूनबमोजिमको निवेदनउपर कारवाहीका क्रममा भएको तहसिलदारको आदेश, तहसिलदारको आदेशबमोजिमको सर्जमिन मुचुल्का एवं सर्जमिन मुचुल्काको आधारबाट भएकाले काठमाडौं जिल्ला अदालतको मिति २०६२।१२।२५ को आदेश तथा सो आदेशलाई सदर गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत पाटनबाट भएको मिति २०६४।११।१३ को आदेश समेतका कार्यबाट निवेदिकाको संवैधानिक तथा कानूनी अधिकार हनन् हुने अवस्था विद्यमान नदेखिने ।

इजलास अधिकृत : विष्णुप्रसाद गौतम
कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन
इति संवत् २०६७ साल जेठ २१ गते रोज ६ शुभम् ।

● यसमा यसै लगाउको २०६४ सालको WO-०७६०, पुनित राय यादव वि. सर्लाही जिल्ला अदालत समेत भएको मुद्दामा यसैअनुसार फैसला भएको छ ।

१५

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६४ सालको ०६३-CR-०६६४, जालसाजी, मेउची पौडेल समेत वि. कुलानन्द पौडेल

इजलास नं. ७

१

शेषपछिको बकसपत्रवालाको हक लिखित प्राप्त हुने बित्तिकै सिर्जना हुने होइन । शेषपछिको बकसपत्र खास गरी दाताको इच्छानुसार निजलाई रिभाए खुसाएबापत प्राप्त हुने र बकसपत्रकै व्यहोरामा विभिन्न शर्त राखी बकसपत्रको लिखत तयार हुने हुन्छ । यसरी लिखतमा लेखिएका शर्त पूरा भएपछि मात्रै उक्त शेषपछिको बकसपत्र कार्यान्वयन हुने र त्यसका आधारमा हक सिर्जना हुने हुँदा शेषपछिको लिखत प्राप्त गरेकै आधारमा दाता जीवित रहिरहेको अवस्थामा सो बकसपत्रको लिखतमा आफ्नो पूर्ण हक रहेको ठानी लिखत कायमै रहेको भन्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : विष्णुप्रसाद गौतम

कम्प्युटर : भवानी हुंगाना

इति संवत् २०६७ साल वैशाख १५ गते रोज ४ शुभम् ।

१६

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६३ सालको ०६३-CI-९७२, अंश, कुलानन्द पौडेल वि. मेउची पौडेल

शेषपछिको बकसपत्रको व्यहोरामा रिभाएबापत यो शेषपछिको बकसपत्र गरिदिएको छु भनी उल्लेख समेत भएको देखियो । पिता शशिधरबाट २०२९ सालमा आफ्नो भाग प्राप्त गरिसकेको भन्ने प्रतिवाद जिकीरलाई यी पुनरावेदक वादीले अन्यथा भन्न नसकी अंशबापतका जग्गाहरू बिक्री वितरण गरी तथ्य समेतलाई स्वीकार गरी बसेको एवं बिक्री भएका जग्गाहरू अंशबापत बाहेक आफ्नो स्वार्जनको प्रमाण पेश गर्न नसकेको एवं अन्य तवरबाट प्राप्त गरेको वस्तुनिष्ठ प्रमाण वादीले पेश गर्न नसकी रहेको यस्तो अवस्थामा वादीले २०२९ सालमा नै अन्य अंशियारासरह अंश हक प्राप्त गरेको देखिँदा अंशबण्डाको ३० नं. बमोजिम घरसारमा नै अंशबण्डा भएको मान्नु पर्ने ।

इजलास अधिकृत : विष्णुप्रसाद गौतम

कम्प्युटर : भवानी हुंगाना

इति संवत् २०६७ साल वैशाख १५ गते रोज ४ शुभम् ।

- यसमा यसै लगाउको २०६३ सालको ०६३-CI-९७५, कुलानन्द पौडेल वि. नन्दराम पौडेल भएको मुद्दामा यसैअनुसार फैसला भएको छ ।

मा.न्या.श्री गौरी ढकाल र मा.न्या.श्री रणबहादुर बम, २०६० सालको दे.पु.नं. ८४०२, अंश दर्ता, रामबिलास सिंह राजपुत समेत वि. शोलेन्द्र सिंह

मुलुकी ऐन, सातौं संशोधनले अंशबण्डाको १८ नं. मा संशोधन हुनु पूर्व बण्डा लाग्ने प्रकृतिको जग्गा सगोलका परिवारका सदस्यको नाउँमा बकस पत्रको लिखतबाट दर्ता गरे पनि बण्डा लाग्दैन भनी अर्थ गर्नु न्याय र तर्कसंगत नहुने ।

इजलास अधिकृत : भोलानाथ ढकाल

कम्प्युटर : धनबहादुर गुरूङ्ग

इति संवत् २०६६ साल फागुन ४ गते रोज ३ शुभम् ।

यसमा यसै लगाउका निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसैअनुसार फैसला भएका छन् :

- २०६० सालको दे.पु.नं. ८४०१, अंश दर्ता, रामबिलास राजपुत समेत वि. रामकैलाश सिंह राजपुत
- २०६३ सालको रिट निवेदन नं. ३६१, उत्प्रेषणयुक्त प्रतिषेध, रामकैलाश सिंह राजपुत पुनरावेदन अदालत हेटौडा समेत

२

मा.न्या.श्री गौरी ढकाल र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की, २०६४ सालको दे.पु.नं. ०६३१, अबण्डा सम्पत्ति बण्डा गरी पाऊँ, प्रेमकुमारी कुर्मी समेत वि. मन्तराज कुर्मी चौधरी समेत

अचल सम्पत्तिको हक हस्तान्तरणको विषयमा शर्तनामामा उल्लेख गर्दैमा हुनसक्ने देखिँदैन । अर्कोतर्फ अंश भरपाई गर्दा विवादको सम्पत्ति पाउन पर्ने थियो भने तत्कालै उक्त सम्पत्ति भरपाई लिँदा उल्लेखन हुनुपर्नेमा त्यसो गर्न सकेको नदेखिएको अवस्थामा प्रतिवादीको नाममा रहेको सम्पत्ति अबण्डामा रही यी वादीहरूको समेत अंश हक लाग्ने भनी अर्थ गर्नु कानूनअनुरूप नहुने ।

इजलास अधिकृत : भोला ढकाल

कम्प्युटर : मिनु शाही

इति संवत् २०६६ साल फागुन २६ गते रोज ४ शुभम् ।

३

मा.न्या.श्री गौरी ढकाल र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, २०६१ सालको दे.पु.नं. ८६९२, २०६६ सालको ०६६-CI-०१४७, अंश, *विमलादेवी श्रीवास्तव वि तारादेवी श्रीवास्तव समेत*

सगोलको एकाको नाउँको जग्गा अर्कोको नाममा नामसारी हुँदा बण्डा लाग्नु नपर्ने हो भनी मान्न कानूनसंगत नहुने ।

इजलास अधिकृत : भोलानाथ ढकाल

कम्प्युटर : धनबहादुर गुरूङ्ग

इति संवत् २०६६ साल फागुन २५ गते रोज ३ शुभम् ।

४

मा.न्या.श्री गौरी ढकाल र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, २०६१ सालको दे.पु.नं. ८४७०, जग्गाधनी दर्ता प्रमाणपूर्जा पाऊँ, *भवरलाल धाडेवा समेत वि. पदमदेवी मल्ल*

स्वामित्व नै साम्पत्तिक हकको मूल परिचय हो । स्वामीले नै कानूनबमोजिम इच्छा प्रकट गरेमा बाहेक लोप हुन सक्दैन । विधिवत प्रक्रियाबाट सम्पन्न अधिग्रहणद्वारा स्वामित्व समाप्त हुने प्रक्रिया वेग्लै हो । स्वामीले आफ्नो सम्पत्ति अरू कसैलाई कुनै पनि कारणले कुनै पनि किसिमले भोग गर्न दियो भन्दैमा सदैवका लागि उसको साम्पत्तिक हकमा अंकुश लगाउन कुनै पनि कानूनले छूट नदिने ।

इजलास अधिकृत : भोलानाथ ढकाल

कम्प्युटर : धनबहादुर गुरूङ्ग

इति संवत् २०६६ साल फागुन २५ गते रोज ३ शुभम् ।

५

मा.न्या.श्री गौरी ढकाल र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, २०६१ सालको फौ.पु.नं. ३१६३, अदालतको अपहेलना, *भवरलाल धाडेवा समेत वि. विजय पदम मल्ल*

निवेदकले २०६०।१।३० मा निवेदनसाथ पेश गरेको फोटोमा कतै गाह्रो उठाएको र कतै आधा माथि पिल्लर समेत उठाएको देखिन्छ । उक्त फोटो विवादित स्थलको नभई अन्यत्र स्थानको हो भन्ने प्रत्यर्थीहरूको जिकीर आउन नसकेको अवस्था एकातिर छ भने पुनरावेदन अदालतको आदेशानुसार

२०६०।४।२४ मा भै आएको स्थलगत नापी नक्सा हेर्दा विवादित कि.नं. ११८ र ११६ मा नयाँ निर्माण कार्य भएको देखिन्छ । पुरानो भत्काई २०५९।५।४ देखि बनाउन थालेको भन्ने सर्जमिनका कतिपय व्यक्तिको भनाई रहेकोबाट अदालतबाट भएको २०५९।५।२१ को आदेशपश्चात् अपूरो निर्माण कार्य भए गरेको देखिन आएको अवस्थामा मुद्दा पर्नुभन्दा पहिला नै घर निर्माण गरिसकेको भन्ने पुनरावेदक जिकीर स्थापित हुन नसकेको अवस्थामा मृतक बनारसीदेवी बाहेकका अन्य विपक्षीहरूले अदालतको आदेशको उल्लंघन गरेको ठहर्‍याई विपक्षीहरूलाई न्याय प्रशासन ऐन, २०४८ को दफा १८(२) बमोजिम जनही रू.१००।- जरीवाना समेत हुने ।

इजलास अधिकृत : भोलानाथ ढकाल

कम्प्युटर : धनबहादुर गुरूङ्ग

इति संवत् २०६६ साल फागुन २५ गते रोज ३ शुभम् ।

६

मा.न्या.श्री गौरी ढकाल र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, २०६५ सालको दे.पु.नं. ०२०३, धनमाल, *उज्वल ज्योति कंसाकार वि. रीना कंसाकार*

विवाहको क्रममा विवाहको दिन दिएका फिरादमा उल्लिखित सूचीबमोजिमका सामानहरू र विवाह प्रयोजनार्थ दिन विवाह अगाडि वा पछाडि खरीद भएका फिराद संलग्न बिलहरूमा उल्लिखित गर-गहना सुन समेत वादीले दाइजो पेवाको रूपमा प्राप्त गरेको सम्पत्ति देखिन आएकोले ती सामान भए सामान नै र नभए सोको हुने मूल्य नगदमा नै वादीले प्रतिवादीबाट फिर्ता भराई लिन पाउने ।

इजलास अधिकृत : फणिन्द्र पराजुली

कम्प्युटर : रानु पौडेल

इति संवत् २०६७ साल जेठ ५ गते रोज ४ शुभम् ।

७

मा.न्या.श्री गौरी ढकाल र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, २०६५ सालको फौ.पु.नं. ०२०३, सम्बन्ध विच्छेद, *उज्वल ज्योति कंसाकार वि. रीना कंसाकार*

आफूउपर वादीले लगाएको सम्पूर्ण आरोप अस्वीकार नगरी पतिसँग सम्बन्ध विच्छेद गर्न नामञ्जूर भएको अवस्था र स्थितिमा सम्बन्ध विच्छेद गरिपाऊँ भन्ने वादीको दावी सबूदप्रमाणको

अभावमा स्थापित हुन सकेको नदेखिँदा सम्बन्ध विच्छेद हुनुपर्ने पर्याप्त आधार प्रमाणवेगार वादी प्रतिवादीबीच रहेको लोग्ने स्वास्नीको नाता सम्बन्ध विच्छेद नहुने ।

इजलास अधिकृत : फणिन्द्र पराजुली

कम्प्युटर : रानु पौडेल

इति संवत् २०६७ साल जेठ ५ गते रोज ४ शुभम् ।

इजलास नं. ८

१

मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री रणबहादुर बम, २०६६-WO-४२१, उत्प्रेषण मिश्रित परमादेश, गणेशप्रसाद सिग्देल वि. ऊर्जा मन्त्रालय समेत

जुन निर्णय र बहुवा प्रक्रिया रद्द गराउने समेतको मागसहित प्रस्तुत रिट निवेदन दायर गरिएको छ, सो निर्णय र प्रक्रिया सम्बन्धित निकायबाटै रद्द भइसकेकोले अब प्रस्तुत रिट निवेदनको औचित्यभित्र प्रवेश गरी रिट निवेदकले उठाएका प्रश्नहरूमा निर्णय गर्नुपर्ने अवस्था रहेन । प्रस्तुत रिट निवेदन वस्तुतः प्रयोजनहीन भई सकेको अवस्था हुँदा मागवमोजिमको आदेश जारी गर्नुपर्ने अवस्था देखिन आएन । रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत : श्रीप्रकाश उप्रेती

कम्प्युटर : रानु पौडेल

इति संवत् २०६७ साउन २० गते रोज ५ शुभम् ।

२

मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौला, ०६५-WO-०२६५, उत्प्रेषण, परमादेश समेत, बेफु चौधरी वि. मोहियानी समिति दाङ्ग, मुकाम जिल्ला भूमिसुधार कार्यालय दाङ्ग समेत

मिति २०४४।१०।२० मा परलोक भएका चिनिया थारूको माहियानी हक २०४५।८।१३ को भूमिसुधार कार्यालय दाङ्गको निर्णयबाट मृत चिनिया थारूका छोरा बाबुलाल थारू समेतका नाममा मोही हक कायम गर्ने निर्णय गरिसकेपछि मृत व्यक्तिको नाममा मुद्दा दायर गरी त्यस्तो मृत व्यक्ति उपस्थित नभएको भनी साविकदेखिको मोहीको मोहियानी

हकलाई समाप्त नगरी नयाँ व्यक्तिलाई मोही कायम गर्ने गरी निर्णय गरिएको र त्यस्तो कायमी कथित मोही समेत निष्काशित भइसकेको देखिँदा उक्त मोहियानी समितिबाट भएको भनिएको फैसलाको कुनै कानूनी अस्तित्वविहीन मोहियानी समिति दाङ्गको मिति २०४८।३।२८ को निर्णय र उक्त निर्णयको आधारमा भूमिसुधार कार्यालय दाङ्गले रामपुर गा.वि.स. वडा नं. ३क, कि.नं. ४०, १५७, १६३, २१४ र २१५ का जग्गाहरूमा मोहियानी हक समाप्त गरी मोही लगत कट्टा हुने गरी गरेको भूमिसुधार कार्यालय दाङ्गको मिति २०६५।७।४ को निर्णय प्राकृतिक न्यायको सिद्धान्तविपरीत देखिने ।

इजलास अधिकृत : कमलप्रसाद पोखरेल

कम्प्युटर : मञ्जिता हुंगाना

इति संवत् २०६७ साल असार ९ गते रोज ४ शुभम् ।

३

मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौला, ०६३-WO-०४५५, उत्प्रेषण, परमादेश समेत, गणेशकुमार श्रेष्ठ वि. भूमिसुधार कार्यालय भक्तपुर समेत

दूषित प्रक्रियाबाट जग्गालाई चीरा पारी कित्ताकाट गरी भूमिसम्बन्धी ऐन, २०२१ को मनसायविपरीत नरम करम नमिलाई जग्गा बाँडफाँडको निर्णय भएको देखिँदा त्यस्तो निर्णयबाट मोही गणेशकुमार श्रेष्ठको संविधानद्वारा प्रदत्त साम्प्रतिक हक एवं मोहीको हैसियतले कमाई आएको जग्गा नरम करम मिलाई आधा-आधा बाँडफाँड गरी लिन पाउने भूमिसम्बन्धी ऐन, २०२१ को दफा २६घ ले संरक्षित गरेको कानूनी हक समेत हनन् भएको देखिएको हुँदा भूमिसुधार कार्यालय भक्तपुरबाट जग्गा बाँडफाँड सम्बन्धमा भएको निर्णय विवेकपूर्ण एवं कानूनको स्वच्छ प्रक्रियाअनुरूप भएको नदेखिने ।

इजलास अधिकृत : कमलप्रसाद पोखरेल

कम्प्युटर : मञ्जिता हुंगाना

इति संवत् २०६७ साल असार ९ गते रोज ४ शुभम् ।

४

मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौला, २०६१ सालको फौ.पु.नं.

३५४१, ३५४०, ३२९६, ३५३९, ३६९४, वन पैदावार हटायो, जयबहादुर बिष्ट वि. नेपाल सरकार, आमऔतार राना समेत वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. हरिशचन्द्र राना समेत

प्रतिवादीहरूमध्ये जयबहादुर बिष्ट, रामऔतार राना, नाथे राना समेतले आफूले रूख काट्ने काममा संलग्न नभएको, रूख काट्ने काम टेकबहादुर कार्कीले गरेको भनी उल्लेख गरेको र निजहरूको जग्गाधनी प्रमाणपूर्जाको नक्कल मागी लिएको देखिएको र जग्गाधनीको नाउँबाट रूख काट्ने अनुमति पाउँ भनी आफैले निवेदन व्यहोरा बनाई टेकबहादुरले निवेदन दिएको देखिन आएको र जग्गाधनीको प्रतिनिधिसमेत आफै भई सम्बन्धित मुचुल्काहरूमा सही गरेको देखिएबाट निज जयबहादुर बिष्ट, रामऔतार राना र नाथेराम रानाको उक्त रूख काट्ने कार्यमा संलग्न रहेको भन्ने देखिन नआएकोले निज प्रतिवादीहरूले अभियोग दावीबाट सफाई पाउने ।

इजलास अधिकृत : खड्गबहादुर श्रेष्ठ

इति संवत् २०६६ साल माघ १२ गते रोज ३ शुभम् ।

५

मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल, २०६५ सालको दे.पु.नं. ००१४, फैसला बदर, गंगाराम चापागाई वि. मुनिमायाँ चापागाई

सगोलका अंशियारहरू बाहेकका अन्य व्यक्तिबाट बकसपत्रको माध्यमबाट प्राप्त गरेको सम्पत्ति वादीको निजी आर्जनको मान्नु पर्ने हुँदा वादी मुनिमायाले बकसपत्रबाट प्राप्त गरेको कि.नं. १०५ को जग्गा मुलुकी ऐन, स्त्री अंशधनको महलको ४, ५ नं. ले वादीले आफूखुस गर्न पाउने हुन्छ । त्यस्तो सम्पत्ति दे.नं. ५७६ को मुद्दाका अंशियारहरू बीच बण्डा गर्न मिल्ने देखिन आएन । वादीले आफूखुस गर्न पाउने सम्पत्तिका सम्बन्धमा वादीका लोगनेले थाहा पाएको भन्ने अर्थ गरी हदम्याद कायम गर्न पनि नमिल्ने हुन्छ । वादीले नक्कल सारी थाहा पाएको भनी नक्कल सारेको मितिबाट ऐनका म्यादाभित्रै फिराद दायर गरेको हुँदा

हदम्यादविहीन फिराद भन्न पनि नमिल्ने हुँदा कि.नं. १०५ को हकमा दावीबमोजिमका फैसला बदर हुने ।
इजलास अधिकृत : शिवप्रसाद खनाल
कम्प्युटर : चन्द्रा तिमिल्सिना
इति संवत् २०६६ साल चैत ३० गते रोज २ शुभम् ।

६

मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल, २०५९ सालको दे.पु.नं. ८०९०, अंश दिलाई चलन चलाई पाऊँ, खड्गप्रसाद चापागाई समेत वि. विष्णुलाल चापागाई समेत

मिसिल संलग्न २०३१।७।२१ को घरसारको बण्डापत्रबाट प्रतिवादीहरू खड्गप्रसाद, तुल्सीप्रसाद र गंगाराम अन्तिम भैरहेको ०४९ सालको दे.पु.नं. ८७७ को फैसलाअनुसार अलग अलग भएको देखिन आयो भने २०३४।१।१९ को बण्डापत्रको आधारमा ०४९ सालको दे.पु.नं. २९५/३७१ को बकसपत्र बदर मुद्दामा पुनरावेदन अदालत इलामबाट भएको फैसलाअनुसार वादीहरू विष्णुलाल र भवानीप्रसाद एवं प्रतिवादी नरप्रसाद र पिता खडानन्द बण्डा भै अलग रहेको देखिन आयो । मिति २०३४।१।१९ को बण्डापत्रलाई पुनरावेदन अदालत इलामबाट दे.पु.नं. २९५/३७१ को बकसपत्र बदर मुद्दामा भएको फैसलाले मान्यता प्रदान गरी उक्त फैसला समेत अन्तिम भइरहेको देखिएबाट उक्त फैसलालाई नै अन्यथा हुने गरी प्रस्तुत मुद्दाको विवादमा वादी प्रतिवादीका बीचमा अंशबण्डा नै भएको होइन भनी निर्णय गर्न कानूनसम्मत नहुने ।

इजलास अधिकृत : शिवप्रसाद खनाल

कम्प्युटर : चन्द्रा तिमिल्सिना

इति संवत् २०६६ साल चैत ३० गते रोज २ शुभम् ।

७

मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल, ०६७-WH-००२, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, अर्जुन थापा वि. काठमाडौँ जिल्ला अदालत समेत

जबरजस्ती चोरीमा हुने कैदको अधिकतम सीमा चोरीको १४ नं. ले नतोकेपछि सोही महलको अन्य दफा हेर्नुपर्ने हुन्छ । चोरीको २७ नं. हेर्दा बिगो, जरीवाना, कैद वा तीनैथोक समेत गर्दा

चोरीमा ८ वर्ष, नकबजनी चोरीमा र जबरजस्ती चोरीमा १० वर्ष, रहजनीमा १२ वर्ष र डाँकामा १८ वर्ष कैद हुन सक्ने भनी कैदको उपल्लो हद तोकिएको पाइन्छ । जबरजस्ती चोरीमा साधारण चोरीमा हुने सजायमा डेढी बढाई कैद र जरीवाना हुने तथा जरीवानाबापत समेत कैद हुने भनिएकोलाई कसैले जरीवाना तिरे बुझाए कैद बस्नु नपर्ने भनी अर्थ गर्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत: श्रीप्रसाद उप्रेती

कम्प्युटर : रानु पौडेल

इति संवत् २०६७ साल साउन २१ गते रोज ६ शुभम् ।

८

मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल, २०५९ सालको दे.पु.नं. ७९९२, निर्णय बदर दर्ता, *देवनारायण धिमाल वि. मालपोत कार्यालय, दमक, भापा*

नेपाल सरकारको नाममा दर्ता भई सुकुम्बासी समस्या समाधान आयोगबाट विभिन्न व्यक्तिलाई वितरण भइसकेको जग्गालाई हाल आएर मेरो नाउँमा दर्ता हुनुपर्ने भन्ने वादीको दावी र पुनरावेदन जिकीर मनासिब देखिन नआउने ।

नेपाल सरकारको नाममा दर्ता रहे भएकै कारण कुनै व्यक्तिको कुनै जग्गामा स्थापित हक जान सक्दैन । तर त्यसो भन्दा कुनै जग्गामा सो व्यक्तिको हक भएको स्पष्ट प्रमाण हुनुपर्ने ।

इजलास अधिकृत : शिवप्रसाद खनाल

कम्प्युटर : धनबहादुर गुरूङ्ग

इति संवत् २०६६ साल चैत ३० गते रोज २ शुभम् ।

९

मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की, २०६२ सालको फौ.पु.नं. ३६९३, सवारी ज्यान, *लक्ष्मण राना वि. नेपाल सरकार*

क्षमताभन्दा बढी हुने गरी यात्रु समेत राखी लैजानु सो कार्य लापरवाही मात्र नभई जानी-जानी गरेको भन्ने देखिएको र त्यस्तो जानी-जानी लापरवाहीबाट सवारी चलाई लगदा क्षमताभन्दा बढी हुने गरी यात्रुको भार बोकेको कारणबाट दुर्घटना हुन गै मानिसको मृत्यु समेत भएको भन्ने कुरा प्रष्ट देखिएकाले पुनरावेदक प्रतिवादी लक्ष्मण रानाले

सवारी तथा यातायात व्यवस्था ऐन, २०४९ को दफा १६१(२) बमोजिम कसूर गरेको ठहर्ने ।

इजलास अधिकृत : खड्गबहादुर श्रेष्ठ

इति संवत् २०६६ साल माघ २४ गते रोज १ शुभम् ।

१०

मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की, २०६२ सालको फौ.पु.नं. ३४३१, डाँका, *नेपाल सरकार वि. द्वारिकालाल महतो समेत*

६ जना व्यक्ति हातहतियारसहित होटलमा जबरजस्ती प्रवेश गरी बरामद भएको नगद र जिन्सी समेत मुलुकी ऐन, चोरीको महलको ६ नं. बमोजिम डाँकाको कसूर गरेको ठहर्छ । सो ठहर्नाले सोही महल १४(४) नं. बमोजिम विपक्षी बनाइएका चारैजना प्रतिवादीहरूलाई जनही ६ वर्ष कैद र विगोको डेढी जरीवानासमेत हुने ठहर्छ । प्रतिवादीहरूलाई डाँकाको कसूर ठहर गर्नुपर्नेमा चोरीको महलको ४ नं. को कसूर ठहर गरी सोही महलको १४(२) नं. बमोजिम सजाय गर्ने गरेको शुरूको फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालत पाटनको मिति २०५९/१०/३ को फैसला मिलेको नदेखिँदा सो हदसम्म केही उल्टी हुने ।

इजलास अधिकृत : खड्गबहादुर श्रेष्ठ

इति संवत् २०६६ साल माघ ११ गते रोज २ शुभम् ।

११

मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, २०६० सालको दे.पु.नं. ८६८२, खिचोला दर्ता बदर हक कायम, *इसरवती देवी वि. रासनारायण यादव समेत*

यी पुनरावेदक र प्रत्यर्थाबीच कि.नं. १०२ का सम्बन्धमा पहिल्यै मुद्दा चली निर्णय भएको र प्रस्तुत मुद्दाको फिराद मुलुकी ऐन, अ.व. ८५ नं. प्रतिकूल भएको पुष्टि भएको अवस्थामा प्रस्तुत मुद्दाको फिराद दर्ता भई सकेको अवस्थामा प्रस्तुत मुद्दाको फिराद नै दर्ता हुन नसक्ने अवस्था रहेको र फिराद दर्ता भईसकेको अवस्थामा उल्लिखित फिराद खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत : शिवप्रसाद खनाल

कम्प्युटर : चन्द्रा तिमल्सेना

इति संवत् २०६६ साल चैत ३१ गते रोज ३ शुभम् ।

१२

मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, २०६५ सालको दे.पु.नं. ००१७, जबरजस्ती करणी, २०६५ सालको फौ.पु.नं. ००१७, ००२५, भुलन सिंह वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. भुलन सिंह

प्रतिवादीले पीडितलाई घरको कौसीमा लगी आफ्नो लिङ्ग पीडितको अङ्गमा छुवाएकासम्म पुष्टि हुन आएबाट प्रतिवादी भुलन सिंहले पीडित ख कुमारीलाई मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीका महलको ५ नं. बमोजिम जबरजस्ती करणीको उद्योगसम्म गरेको पुष्टि हुन आयो । प्रतिवादीले जबरजस्ती करणीको उद्योग गरेबाट जबरजस्ती करणीको महलको ५ नं. बमोजिम ऐ. ३(१) नं. मा उल्लिखित सजायको आधा ५ वर्ष कैद हुने ।

इजलास अधिकृत : शिवप्रसाद खनाल

कम्प्युटर : मञ्जिता हुंगाना

इति संवत् २०६७ साल बैशाख १५ गते रोज ४ शुभम् ।

१३

मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६४-सी-०१०१४, निषेधाज्ञा, गंगाई हाथी वि. मल्हुर देवी समेत

निवेदकसमेत वादी भई धनुषा जिल्ला अदालतमा चलेको २०६१ सालको दे.पु.नं. १९१३ को लिखत दर्ता बदर मुद्दामा वादीको दावी खारेज हुने ठहरी मिति २०६१।२।१२ मा फैसला भएको देखिन्छ । निवेदकको पुनरावेदन परी वा अन्य तवरबाट पनि हालसम्म उक्त फैसला उल्टी वा बदर भएको भनी निवेदकले देखाउन सकेको पाइँदैन । आफ्नो पुनरावेदन पत्रमा चित्त बुझाई बसेको भनी स्वीकार गरेको देखिन्छ । यस्तो अवस्थामा निवेदकले दावी गरेको जग्गामा आफ्नो निर्विवाद हक भोग रहेको देखाउन सकेको देखिएन । आफ्नो हक स्वामित्व नै स्थापित भइरहेको भनी देखाउन नसकेको अवस्थामा सो जग्गामा अरूले हस्तक्षेप गर्न आशंकाको स्थिति देखाई निषेधाज्ञातर्फ दावी लिन नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : कमलप्रसाद पोखरेल

इति संवत् २०६७ साल जेठ २७ गते रोज ५ शुभम् ।

१४

मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६४ सालको सी-१०४६, परमादेश, रामदयाल सहनी वि. गाउँ विकास समितिको कार्यालय अयोध्यानगर, सिराहा समेत

निवेदकलाई अयोध्यानगर गा.वि.स. को प्राविधिक सहायक पदमा नियुक्ति पाउनु पर्ने कुनै पनि प्रकारको कानूनी हक निवेदकले स्थापित गर्न सकेको देखिएन । स्थानीय विकास मन्त्रालय वा जिल्ला विकास समितिले गरेको परिपत्रको आधारमा कानूनी हकको सिर्जना भएको अनुमान गर्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : कमलप्रसाद पोखरेल

कम्प्युटर : धनबहादुर गुरूङ्ग

इति संवत् २०६७ साल जेठ २७ गते रोज ५ शुभम् ।

१५

मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६४ सालको दे.पु.नं. १०१२, निषेधाज्ञा, किशोरी मण्डल समेत वि.रामजी साह तेली

दावीको पोखरी कानूनविपरीत सरकारको नाममा दर्ता भएको भनी जिकीर गरे पनि आफ्नो हक स्थापित गराएको वा सरकारको नाममा रहेको दर्तालाई बदर गराई पुनरावेदकले आफ्नो नाममा दर्ता गराएको भन्ने कुरा हाल पुनरावेदन गर्दाको अवस्थामा समेत देखाउन सकेको देखिँदैन । उक्त पोखरी र त्यसको डिलसमेत सरकारका नाममा रहेको दर्ता कायमै रहेको अवस्थामा त्यसको सार्वजनिक प्रयोगबाट रोक्न नमिल्ने ।

सार्वजनिक प्रयोगमा रहेको पोखरीको जग्गालाई विपक्षी पुनरावेदकहरूले आफ्नो हकभोग रहेको भन्ने जिकीर लिएको आधारमा मात्र निजहरूको हकभोगको मानी पुनरावेदन अदालतबाट जारी भएको निषेधाज्ञाको आदेश बदर गर्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : कमलप्रसाद पोखरेल

कम्प्युटर : मञ्जिता हुंगाना

इति संवत् २०६७ साल जेठ २७ गते रोज ५ शुभम् ।

१६

मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौला, ०६३-WO-०३९२, उत्प्रेषण परमादेश समेत, असगर अली सिद्दीकी वि. रामप्रसाद गडरिया समेत

यस अदालतले असाधारण अधिकारक्षेत्रान्तर्गत निर्णय गर्दा विवादको तथ्य (merit) भित्र प्रवेश गरी मुद्दाको पुनरावेदन सुने जस्तो गरी निर्णय गर्न मिल्ने हुँदैन । कुनै न्यायिक वा अर्धन्यायिक अधिकारीले गरेको निर्णय यस अदालतबाट उत्प्रेषणको आदेश जारी भई बदर हुनका लागि मुख्य रूपले अधिकारक्षेत्रात्मक त्रुटि, कानूनी कार्यविधिको गम्भीर उल्लंघन, प्राकृतिक न्यायको बेवास्ता र बिल्कूल अन्यायपूर्ण Extreme Injustice निर्णय भएको प्रत्यक्ष देखिनु पर्ने ।

कानूनले अधिकार नदिएको र अधिकारै नभएको विषयमा निर्णय गरेको वा दिएको अधिकार नाघेर निर्णय गरेको अवस्था वा कानूनअनुसार बाध्यात्मक रूपमा पालन गर्नुपर्ने कार्यविधिको पालन नगरेको वा प्राकृतिक न्यायको सिद्धान्तविपरीत निर्णय गरी व्यक्तिको मौलिक हक वा कानूनी हक अधिकार हनन् भएकोमा अन्य उपचारको व्यवस्था नभएको वा उपचारको व्यवस्था भए पनि प्रभावकारी वैकल्पिक कानूनी उपचार नभएको अवस्था देखिनु पर्ने ।

इजलास अधिकृत : कमलप्रसाद पोखरेल

कम्प्युटर : मञ्जिता हुंगाना

इति संवत् २०६७ साल असार ९ गते रोज ४ शुभम् ।

यस्तै प्रकृतिका निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसैअनुसार फैसला भएका छन् :

- ०६३-WO-०३८९, उत्प्रेषण परमादेश समेत, असगर सिद्दीकी वि. दुर्गाप्रसाद चमार समेत
- ०६३-WO-०३९०, उत्प्रेषण परमादेश समेत, असगर सिद्दीकी वि. रामफेरन राठ समेत
- ०६३-WO-०३९१, उत्प्रेषण परमादेश समेत, असगर सिद्दीकी वि. रतिराम राठ समेत

१७

मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौला, २०६५ सालको WO-०२४७, उत्प्रेषण परमादेश समेत, सुरेन्द्रमान सिंह डंगोल वि. भूमिसुधार कार्यालय समेत

विपक्षी योगेन्द्रमान सिंह डंगोल साविक मोही जगतमानको छोरा भएकोमा विवाद नभएको हुँदा त्यसरी जग्गाधनीले पत्याइसकेपछि परलोक भएका मोही छोराको नाममा मोही हक नामसारी गर्ने गरी गरिएको निर्णयलाई कानूनविपरीत भएको भन्न मिल्ने । मोहीका हकदारहरू मध्ये कुनै एकलाई मोहीको रूपमा पत्याउन पाउने जग्गाधनीको अधिकार हो । सोही अधिकार प्रयोग गर्ने साविक मोहीका जीवित छोराहरू मध्ये एकलाई मोहीको रूपमा पत्याई निजको नाममा मोही नामसारी हुनुमा कुनै गैरकानूनी काम कारवाही भएको भन्न नमिल्ने ।

कानूनमोजिम जग्गाधनीले मोही पत्याई दावीको जग्गामा मोही नामसारी तथा मोही लगत कट्टा गर्ने सम्बन्धमा भूमिसुधार कार्यालय काठमाडौँबाट भएको मिति २०६७.६.२७ को निर्णयबाट निवेदकको कुनै कानूनी एवं संवैधानिक हक हनन् भएको नदेखिएको तथा निवेदकले उक्त निर्णयका सम्बन्धमा अनुचित बिलम्ब गरी यस अदालतमा रिट निवेदन दायर गरेको समेत देखिँदा दावीमोजिम रिट जारी हुने अवस्था नदेखिने ।

इजलास अधिकृत : कमलप्रसाद पोखरेल

कम्प्युटर : मञ्जिता हुंगाना

इति संवत् २०६७ साल असार ९ गते रोज ४ शुभम् ।

१८

मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौला, २०६४-WO-१०२६, उत्प्रेषण समेत, नगेन्द्र राउत कुर्मी वि. जिल्ला भूमिसुधार कार्यालय, रौतहट समेत

गोला हाली बाँडफाँड गरिएको भन्ने भूमिसुधार कार्यालयले निर्णयमा उल्लेख गरेको देखिएकोले न्यायिक अधिकारीले निर्णयमा उल्लेख गरेको कुरालाई निवेदकले भन्दैमा अन्यथा होला भनी अनुमान गर्न मिल्ने । गोलाद्वारा बाँडफाँड

गरिएको कुरालाई विपक्षीले पनि स्वीकार गरेको देखिन्छ। करीब उस्तै प्रकृतिको तर सबै एकनासको नभई तुलनात्मक रूपमा कतै राम्रो कतै कमसल पर्दा दुबै पक्षको मञ्जूरीमा गोलाको प्रयोग गरी निर्णय गरिएको देखिन्छ। पक्ष विपक्षीलाई सहमत गराउन विकल्प नभएको अवस्थामा दुबै पक्षको मञ्जूरीमा गरिएको निर्णयलाई कानूनविपरीत भन्न नमिल्ने।

इजलास अधिकृत : कमलप्रसाद पोखरेल

कम्प्युटर : मञ्जिता हुंगाना

इति संवत् २०६७ साल असार ९ गते रोज ४ शुभम्।

१९

मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६५ सालको WO-०१६६, उत्प्रेषण परमादेश समेत, गीता थापा कार्की समेत वि. भौतिक योजना तथा निर्माण मन्त्रालय समेत

वैकल्पिक कानूनी उपचारको मार्ग उपलब्ध हुँदाहुँदै निवेदकहरू यस अदालतको असाधारण अधिकारक्षेत्रअन्तर्गत रिट क्षेत्रमा प्रवेश गरेको र सञ्चालित आयोजनाप्रति विरोध नगरी त्यसबाट आफ्नो जग्गामात्र अलग गरिपाऊँ भन्ने निवेदकहरूको माग दावी रहेको देखिँदा निवेदकहरूको मागबमोजिम उत्प्रेषणको आदेश जारी हुने अवस्था नदेखिने।

निवेदकहरूको दावी गरेको विषयमा पुनरावेदन अदालत पाटनमा परेको निषेधाज्ञायुक्त परमादेशको निवेदन खारेज भइसकेको तथा जग्गा प्राप्त ऐन, २०३४ अन्तर्गत पर्याप्त र प्रभावकारी वैकल्पिक कानूनी उपचारको मार्ग उपलब्ध हुँदाहुँदै निवेदकहरू यस अदालतको असाधारण अधिकारक्षेत्रअन्तर्गत रिट क्षेत्रमा प्रवेश गरेको समेत देखिँदा उक्त आयोजनाको कार्यान्वयनको सिलसिलामा विपक्षीहरूबाट भएको जग्गा प्राप्त गर्ने निर्णय समेतका काम कारवाहीहरू निवेदकहरूको संविधान तथा कानूनप्रदत्त अधिकार गैरकानूनी रूपमा हनन् मान्न नमिल्ने।

इजलास अधिकृत : कमलप्रसाद पोखरेल

कम्प्युटर : धनबहादुर गुरुङ्ग

इति संवत् २०६७ साल जेठ २७ गते रोज ५ शुभम्।

यसमा यस्तै प्रकृतिको निम्न मुद्दाहरूमा समेत यसैअनुसार फैसला भएका छन् :

- २०६५ सालको WO-१०१२, उत्प्रेषण परमादेश समेत, मोहनमाया एगोल श्रेष्ठ समेत वि. भौतिक योजना तथा निर्माण मन्त्रालय समेत
- २०६४ सालको WO-१०१३, उत्प्रेषण परमादेश समेत, लक्ष्मी कार्की (बोगटी) समेत वि. भौतिक योजना तथा निर्माण मन्त्रालय समेत
- २०६४ सालको WO-१०४८, उत्प्रेषण परमादेश समेत, चिनीबहादुर थापा समेत वि. भौतिक योजना तथा निर्माण मन्त्रालय समेत

इजलास नं. ९

१

मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा र मा.न्या.श्री अवधेशकुमार यादव, २०६५ सालको दे.पु.नं. ०६५९, निषेधाज्ञायुक्त परमादेश, निर्मला खड्का क्षेत्री समेत वि. हरिमाया खड्का समेत

विवादको जरीया देवानी प्रकृतिको र हक हस्तान्तरण २ पटक भइसकेको समेत पाइन्छ भने सोही विषयमा यिनै पुनरावेदक र विपक्षीबीच लिखत बदर र जालसाजी मुद्दा परी ललितपुर जिल्ला अदालतबाट हारजीतको फैसला भइसकेको अवस्थामा अपराधको अनुसन्धान गर्ने निकायले देवानी प्रकृतिको मुद्दामा सोधपुछ गर्ने भन्दै पुनरावेदकलाई पटक पटक दुःख दिनु उचित भन्न मिल्ने। यस्तो स्थितिमा आवश्यक छलफल गराई सम्बन्धित निकायमा जान सरसल्लाहसम्म दिन मिल्छ। तर बारम्बार पत्र काटी निवेदकहरूको दैनिक जीवनमै असर पर्ने गरी धरपकड गरिरहेको देखिँदा विपक्षी प्रहरी परिसरले त्यस्तो कानून विपरीतको कार्य गर्न मिल्दैन। अबदेखि नगर्नु भनी उचित निर्देशनसम्म दिनु कानूनसंगत हुन जाने।

इजलास अधिकृत : परशुराम भट्टराई

कम्प्युटर : शम्भुप्रसाद शाह

इति संवत् २०६७ साल असार ३१ गते रोज ५ शुभम्।

२

मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा र मा.न्या.श्री अवधेशकुमार यादव, २०६५ सालको CR-०२०८, केही सार्वजनिक अपराध, नेपाल सरकार वि. हरिप्रसाद चौलागाईं,

अनुसन्धानको क्रममा संकलित सबूद प्रमाणहरू अदालतसमक्ष उपस्थित गराई आफ्नो दावीलाई समर्थित गराउने दायित्व निर्वाह गर्न असमर्थ रहेको र प्रतिवादीको प्रहरीसमक्ष गरेको एक मात्र कागजलाई निजको विरुद्धमा स्वतन्त्र प्रमाणमा ग्रहण गर्न मिल्ने समेत देखिएन । कुनै व्यक्तिले अमूक कसूर गरेको भनी दावी लिँदा तथ्ययुक्त प्रमाणको अभावमा कसूरदार ठहर्‍याउन फौजदारी न्यायको सिद्धान्तविपरीत हुने ।

इजलास अधिकृत : भोलानाथ ढकाल

कम्प्युटर : धनबहादुर गुरूङ्ग

इति संवत् २०६६ साल माघ २१ गते रोज ५ शुभम् ।

३

मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा र मा.न्या.श्री अवधेशकुमार यादव, २०६४ सालको दे.पु.नं. ३५९, लेनदेन, शुकुबहादुर श्रेष्ठ वि. मनमाया प्रसाईं समेत

एउटा कामलाई भनी सहीछाप गरेको लिफा कागजमा सो काममा नलगाई अर्को व्यहोराको भरपाई लिखत तयार गरेको देखिँदा प्रतिवादीहरूलाई कीर्ते कागजको ३ नं विपरीत जालसाजको कसूर गरेको ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालतको फैसला मिलेकै देखिने ।

इजलास अधिकृत : भोलानाथ ढकाल

कम्प्युटर : धनबहादुर गुरूङ्ग

इति संवत् २०६५ साल माघ २१ गते रोज ५ शुभम् ।

४

मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा र मा.न्या.श्री अवधेशकुमार यादव, २०६४ सालको MS-०००६, अदालतको अपहेलना, टेकबहादुर रावल वि. कलर एक्सप्रेस प्रा.लि. अनामनगर काठमाडौं समेत

पत्रिकाका सम्पादक समेतको लिखित जवाफमा आफूहरूको उद्देश्य अदालतको अपहेलना गर्ने नभएको भनी “न्यायपालिकाको संस्थागत गरिमा र न्यायमूर्तिहरूलाई व्यक्तिगत लाञ्छना

लगाउने उद्देश्य अभिप्रेरित नभएको र मुद्दाका पक्ष विजयनाथ भट्टराईसँग सम्बन्धित मात्र रहेको व्यहोरा सादर अनुरोध गर्दछ” भनी लिखित जवाफ पेश गरेको अवस्थामा उक्त समाचार प्रकाशित भएको कारणबाट अदालतको अपहेलना भयो भन्ने दावी प्रमाणित हुन नसक्ने भएबाट विपक्षीहरूले अदालतको अपहेलना गरे भन्ने दावी पुग्न नसक्ने ।

इजलास अधिकृत : भोलानाथ ढकाल

कम्प्युटर : धनबहादुर गुरूङ्ग

इति संवत् २०६६ साल माघ २१ गते रोज ५ शुभम्

५

मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल, २०६५-WO-०६९९, उत्प्रेषण परमादेश, डा. परमेश्वरी श्रेष्ठ समेत वि. स्वास्थ्य तथा जनसंख्या मन्त्रालय समेत

पछि प्रकाशन हुने विज्ञापनमा उम्मेदवार हुन यी निवेदकहरूलाई रोक लगाएको कहीं कतैबाट देखिन आएन । पछि हुने विज्ञापनमा समेत उम्मेदवार भई आफ्नो योग्यता प्रदर्शन गरी रोजगारी प्राप्त गर्ने अवसर यी निवेदकहरूको सुरक्षित रहिरहेको अवस्थामा अख्तियारको मिति २०६५।१।२० को बैठकको निर्णय, सो निर्णयको आधारमा मिति २०६५।१।२६ मा गरिएको परिपत्र एवं सो परिपत्रअनुसार अस्पतालबाट भए गरेका काम कारवाही समेतबाट निवेदकहरूको संवैधानिक एवं कानूनी हक हनन् भएको भन्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : उद्धव गजुरेल

कम्प्युटर : रानु पौडेल

इति संवत् २०६७ साल असार ९ गते रोज ४ शुभम् ।

६

मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल, २०६३-WO-०२८४, उत्प्रेषण परमादेश, गजेन्द्रप्रसाद डगौरा थारू वि. भूमिसुधार कार्यालय, कैलाली धनगढी समेत

एउटै जग्गाको मोहियानी हकको प्रमाणपत्र गुरूप्रसाद डगौराको नाममा भएको र सोही जग्गाको जग्गाधनी दर्ता सेस्ताको मोही महलमा शिवप्रसाद डगौरा थारू उल्लेख भै एउटै जग्गामा दुई जनाको मोही अस्तित्व देखिन आएपछि

वास्तविक मोही को हो ? भन्ने सम्बन्धमा सम्बन्धित अधिकारीले सबूद प्रमाण मूल्याङ्कन गरी यकीन निर्णय गर्नुपर्नेमा प्रमाणपत्र प्राप्त मोही गुरुप्रसाद डगौराको बारेमा केही पनि उल्लेखसम्म नगरी निजका नाउँमा म्याद सूचना जारी नगरी निजलाई सो विषयमा थाहा जानकारी नै नदिई प्रतिवाद गर्ने मौका समेतबाट बञ्चित गरी प्राकृतिक न्यायको सिद्धान्तप्रतिकूल हुने गरी मोठ स्रेस्ताबाट मोही शिवप्रसाद डगौरा थारूको नाम मात्र कट्टा गर्ने गरी गरिएको भुमिसुधार कार्यालय कैलालीको मिति २०४९।१।२।६ को निर्णय कानूनको रोहमा कानूनप्रतिकूल देखिँदा उक्त निर्णय उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर हुने ।

इजलास अधिकृत : उद्धव गजुरेल

कम्प्युटर : रानु पौडेल

इति संवत् २०६७ साल असार ९ गते रोज ४ शुभम् ।

७

मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की, २०६३ सालको रिट नं. ०५१६, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, फाल्गुनी भट्टराई वि. मेची भन्सार कार्यालय, झापा समेत

आफूउपर चलेको गाडी चोरी पैठारी मुद्दाको चाँडो किनारा गराउनेतर्फ पहल नगरी वैकल्पिक उपचारको बाटो नअपनाई यस अदालतको असाधारण अधिकारक्षेत्रमा प्रवेश गरेको देखियो । प्रत्यर्थी मेची भन्सार कार्यालयमा दायर भएको मुद्दामा क्षेत्राधिकारको त्रुटि वा कानूनको प्रत्यक्ष त्रुटि रहेको भन्ने निवेदकको भनाई पनि रहेको देखिँदैन । यस्तो अवस्थामा यस अदालतबाट निवेदन मागबमोजिमको आदेश जारी हुने अवस्था नदेखिने ।

इजलास अधिकृत : परशुराम भट्टराई

कम्प्युटर : शम्भुप्रसाद शाह

इति संवत् २०६७ साल असार २८ गते रोज २ शुभम् ।

८

मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की, २०६२ सालको रिट नं. २८४५, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, नेत्रप्रसाद मैनाली समेत वि. मालपोत कार्यालय पर्सा समेत

एकाको नाउँमा कायम रहेको जग्गा अन्य व्यक्तिको नाउँमा घुसेको वा विलीन भएको वा छुटेको भए आवश्यक जाँचबुझ गरी दर्ता स्रेस्ता अद्यावधिक गरी दिने समेतका कार्य कानूनी व्यवस्थाअनुसार मालपोत कार्यालय र नापी शाखाले गर्न नमिल्ने होइन । तर यी निवेदक जस्ता सरोकारवालालाई बुझ्दै नबुझी प्राकृतिक न्यायको सिद्धान्तअनुसार सुनुवाईको मौका नै नदिई मालपोत कार्यालय, पर्साले गरेको भनेको निर्णय फाँटवालाबाट तयार गरिएको टिप्पणी सदर गरेको देखिँदा त्यस्तो निर्णयलाई निर्णयको संज्ञा दिन नमिल्ने ।

निवेदकहरूलाई प्रतिकूल असर पर्ने गरी निर्णय गर्दा यी निवेदकहरूलाई सफाइको मौका दिनुपर्नेमा तथा कित्ताफोड, हाल साविक हुने कार्यबाट प्रभावित हुने यी निवेदकहरूलाई आफ्नो प्रमाण पेश गरी स्वतन्त्र रूपमा विवेचना वा मूल्याङ्कन गरेर मात्र निर्णय गर्नुपर्नेमा सोबमोजिम नगरी गरेको निर्णय प्राकृतिक न्यायको सिद्धान्त प्रतिकूल हुँदा उक्त निर्णय कानूनसम्मत मान्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : परशुराम भट्टराई

इति संवत् २०६७ साल असार २८ गते रोज २ शुभम् ।

- यसमा यसै लगाउको २०६३ सालको विविध नं. १३१, अदालतको अपहेलना, पुष्पारानी चौधरी वि. इन्दिराकुमारी शर्मा समेत भएको मुद्दामा यसैअनुसार फैसला भएको छ ।

९

मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६४ सालको रिट नं. ०६९५, उत्प्रेषण, लोचन यादव समेत वि. लोकसेवा आयोग, केन्द्रीय कार्यालय समेत

कुनै कार्यबाट पक्षलाई मर्का परेको रहेछ भने सो अन्यायका विरुद्ध समयमै उपचारको मार्ग अवलम्बन गर्नुपर्ने हुन्छ र न्यायको याचना गर्नेले उचित बेलामा अदालतमा आउनु पर्दछ बिलम्ब गरी निवेदकले दायर गर्दछ भने पक्षले गरेको गल्तीबाट निजलाई नै फाइदा हुने गरी अदालतले रिट क्षेत्रबाट

मद्दत गर्न सक्ने देखिँदैन । यी निवेदकहरू २०५६ सालमा भएको निर्णय बदर गराउन २०६४ सालमा रिट निवेदन दायर गर्न आएको देखिँदा बिलम्बको सिद्धान्त समेतले प्रस्तुत निवेदनबाट उपचार प्रदान गर्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : परशुराम भट्टराई

कम्प्युटर : शम्भुप्रसाद शाह

इति संवत् २०६७ साल असार २९ गते रोज ३ शुभम् ।

१०

मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६४ सालको रिट नं. ०४३९, उत्प्रेषण समेत **मुकुन्दराज शर्मा वि. फुल्टेका माध्यमिक विद्यालय, नेपालगञ्ज समेत**

बेतलबी, स्वयंसेवी, अस्थायी ३ महिनाको पदावधि तोकी प्रत्यर्थी विद्यालयको विद्यालय व्यवस्थापन समितिले नियुक्ति दिएका शिक्षक यी निवेदकलाई सोही विद्यालय व्यवस्थापन समितिले विद्यालयको आर्थिक अभाव र यी निवेदकको शिक्षक प्रमाणपत्र नभएको भनी अवकाश दिएको विषयलाई अन्यथा भन्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : परशुराम भट्टराई

कम्प्युटर : शम्भुप्रसाद शाह

इति संवत् २०६७ साल असार २९ गते रोज ३ शुभम् ।

११

मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६३-सी-००८२, अंश दपोट लिखत दर्ता बदर दर्ता, **विटोरी महतो कोइरी वि. सुजानदेवी महतो कोइरी**

अंशमा दावी गरी अदालतमा फिराद दायर गरेपश्चात् उक्त मुद्दामा फिराद परेको अधिल्लो दिनलाई मानो छुट्टिएको मिति कायम भएको समेत उक्त अंश मुद्दाबाट पुष्ट्याई हुन आउँछ । अब अदालतबाट मानो छुट्टिएको मिति निर्धारण भएपश्चात् भएको विवादित लेनदेनमा वादीको मञ्जुरी रहे भएको अवस्था मिसिल प्रमाणबाट देखिन नआएको हुँदा प्रतिवादीहरू बीच सम्पन्न उक्त लेनदेन व्यवहारलाई कानूनसम्मत भन्न नसकिने ।

इजलास अधिकृत : हरिराज कार्की

इति संवत् २०६६ साल फागुन १९ गते रोज ४ शुभम् ।

१२

मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६४ सालको रिट नं. ०१२२, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, **श्यामकुमार श्रेष्ठ वि. निजामती किताबखाना समेत**

निवेदकको मिति २०२९।६।१ देखि मिति २०३४।३।२ सम्मको ४ वर्ष ९ महिना अस्थायी सेवा अवधिको निवृत्तिभरण उपलब्ध गराउन नसकिने भनी विपक्षी महानिर्देशक समेतबाट भएको मिति २०६४।४।२० को निर्णयलगायत सो निर्णयका आधारमा भएका पत्रहरू र काम कारवाही कानूनप्रतिकूल हुँदा उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर गरी दिएको छ । अब निवेदकको मागबमोजिम निवेदकको ४ वर्ष ९ महिना सेवा अवधि साधारणतर्फ मानी सो अवधि जोडी जोडाई निवेदकलाई निवृत्तिभरणलगायतको सुविधा उपलब्ध गराउनु भनी विपक्षीहरूका नाउँमा परमादेशको आदेश समेत जारी हुने ।

इजलास अधिकृत : परशुराम भट्टराई

इति संवत् २०६७ असार २९ गते रोज ३ शुभम् ।

१३

मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६४ सालको रिट नं. ०६७४, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, **चन्द्रकिरण श्रेष्ठ समेत वि. कृषि तथा सहकारी मन्त्रालय समेत**

कानूनमा व्यवस्था भएबमोजिम विपक्षीहरू कार्यालयहरूबाट भएको पशु ढुवानी गर्दा सहजता अपनाउनु पर्ने, पारवहन गर्ने सवारी साधनहरूमा पशुको हितलाई ध्यानमा राखी दुई तल्ला बनाई पशुहरू ढुवानी गर्न नपाइने गरी गरेको परिपत्रले पशु ढुवानी गर्न तथा पेशा तथा रोजगारी गर्ने अधिकार रोक नलगाइएको नभई सहजतापूर्वक पशुहरूको ढुवानी गर्नेसम्म निर्देश गरेको देखिँदा सो निर्देशनबाट यी निवेदकहरूको हक हनन् भएको नदेखिएको साथै पशु ढुवानी मापदण्ड २०६३ मस्यौदाको रूपमा रहेको र जारी गरी लागू नै नभएको निर्देशिका बदरको माग रहेको निवेदन नै

औचित्यविहीन देखिँदा रिट जारी हुनसक्ने अवस्था नदेखिने ।

इजलास अधिकृत : अम्बिका निरौला

इति संवत् २०६७ साल असार २१ गते रोज २ शुभम् ।

१४

मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६४ सालको रिट नं. ०११६, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, *श्रुतिधर काफ्ले वि. शिक्षा तथा खेलकुद मन्त्रालय समेत*

लामो समयसम्म एकै पदमा रही आफ्नो कर्तव्य पालन गर्दा पनि बहुवा नहुनेहरूका हकमा पुरस्कारस्वरूप एक तह बहुवाको विशेष व्यवस्था गरी सार्वजनिक विद्यालयमा कार्यरत् शिक्षकहरूको वृत्ति विकासको नीति अवलम्बन गरी सोहीअनुरूप कानूनमा समेत स्पष्ट व्यवस्था गरेको स्थितिमा आवश्यक मापदण्ड पूरा गरेकाका हकमा कानूनविपरीत जिल्ला शिक्षा कार्यालय तनहुँले निवेदकलाई मिति २०६५।३।३१ देखि लागू हुने गरी प्रचलित कानूनी प्रावधानको पालना नगरी निम्न माध्यमिक विद्यालय तृतीय श्रेणीको पदबाट अनिवार्य अवकाश दिने गरी भएको मिति २०६५।३।३० को निर्णय एवं सोसम्बन्धी सम्पूर्ण काम कारवाही उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर हुने ।

इजलास अधिकृत : परशुराम भट्टराई

इति संवत् २०६७ असार २९ गते रोज ३ शुभम् ।

१५

मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६३ सालको रिट नं. ३४३८, उत्प्रेषण मिश्रित प्रतिषेध, *विश्वनाथ केडिया वि. सर्लाही जिल्ला विकास समितिको कार्यालय, मलंगवा समेत*

निवेदक उद्योगबाट कानूनविपरीत चिनी र छुवामा कर लगाउने तथा संकलन गर्ने कार्य गरिएको देखिँदा विपक्षी जिल्लास्तरीय राजश्व परामर्श समिति, जिल्ला विकास समिति सर्लाहीको मिति २०६१।१।२२ को निर्णयअनुसारको सिफारिश र सो सिफारिशका आधारमा जिल्ला विकास परिषद्, जिल्ला विकास समिति सर्लाहीले गरेको मिति २०६१।१।१९ को निर्णय र सोको आधारमा भएको मिति २०६३।१।२९ को विपक्षी ठेकेदारलाई दिएको

ठेक्का पट्टाको च.न. ३१९२ को पत्र लगायतका सम्पूर्ण काम कारवाहीहरू समेत उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर हुने ।

इजलास अधिकृत : परशुराम भट्टराई

कम्प्युटर : शम्भुप्रसाद शाह

इति संवत् २०६७ साल असार २७ गते रोज १ शुभम् ।

- यसमा यसै लगाउको २०६३ सालको दे.पु.नं. ८९८१, निषेधाज्ञा, *विश्वनाथ केडिया वि. सर्लाही जिल्ला विकास समितिको कार्यालय, मलंगवा* भएको मुद्दामा यसैअनुसार फैसला भएको छ ।

इजलास नं. १०

१

मा.न्या.श्री रणबहादुर बम र मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौला, २०६६-CR-०१९९, कर्तव्य ज्यान, *फत्तेसिंह बुढा वि. नेपाल सरकार*

करणी नै गर्ने भनी दूषित मनसाय लिई रातको समयमा मृतकको घरको ढोका खोली भित्र गएपश्चात् करणी लिनुदिनुको कार्य हुन नसकेको र करणी गर्ने इच्छाको विपरीतको वातावरण सिर्जना भएको कारण दुई पक्षबीच कटपीट भई सोको परिणती तुलसी नेपालीको ज्यान गएको देखिँदा प्रस्तुत वारदातलाई भवितव्यको वारदात भन्न नमिल्ने ।

प्रतिवादीको साविती बयान अन्य स्वतन्त्र प्रमाणबाट पुष्टि भई निज प्रतिवादीकै कर्तव्यबाट तुलसी नेपालीको मृत्यु भएको र यी प्रतिवादी शंकारहित तवरबाट कसूरदार भएको पुष्टि हुने ।

इजलास अधिकृत : दीपक ढकाल

इति संवत् २०६७ साल साउन २७ गते रोज ५ शुभम् ।

२

मा.न्या.श्री रणबहादुर बम र मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौला, २०६३-CI-०१७७, लेनदेन, *कुमारीदेवी चौधरी वि. छेदीलाल माभी समेत*

कपाली तमसुकको कागजलाई वारेशनामा भनी सही गराएका हुन्, रकम लिनु दिनु गरेको होइन, रकम लिनुदिनु नगरेको हुँदा तिर्नु बुझाउनु

पर्ने होइन भन्ने प्रतिवादीका साक्षी अशोककुमारको बकपत्र भएको देखिन्छ । वादीका साक्षी अतुराम चौधरीको बकपत्र भूट्टा देखिएको र प्रतिवादीका साक्षीले रकम तिर्नु बुझाउनु पर्ने होइन भनी बकपत्र गरेको पाइएकोले उल्लिखित साक्षी प्रमाणका आधारमा प्रतिवादी छेदीलाल चौधरीले वादी कुमारीदेवी चौधरीलाई रकम तिर्नु बुझाउनु पर्ने देखिन आएन । वादी दावी भूट्टा रहेको पुष्टि हुने ।
इजलास अधिकृत : उद्धव गजुरेल
इति संवत् २०६७ साल जेठ २० गते रोज ५ शुभम् ।

३

मा.न्या.श्री रणबहादुर बम र मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौला, २०६६-CR-०६५०, २०६६-RC-००८२, कर्तव्य ज्यान, वृखबहादुर घिमिरे वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. वृखबहादुर घिमिरे

मृतकलाई पहिला कुटपीट गरी बेहोस भई श्वास गै नसकेको अवस्थामा डोरी वा त्यस्तै प्रकारको वस्तुद्वारा गला दबाई कसी मारेको भन्ने तथ्य मृतकको घाँटी तथा भुण्डिएको भनेको बाँसको बलो दुबै ठाउँमा डोरी गाँठो नपारी फन्को मात्र पारी यसै छोडिएको स्थितिबाट स्पष्ट हुने ।

मृतकको दुबै घुँडाले भुइँमा टेकेको भन्ने उल्लेख छ । शरीरको कुनै अङ्ग हात वा खुट्टाले जमीन छोएको अवस्थामा शरीरको भार Cervical vertebra माथि पर्न जाँदैन । Cervical vertebra नभाचिएको र लासको दुबै घुँडाले जमीन टेकेको देखिँदा मृतक र यी प्रतिवादी दुई पक्षबीच भएको कुटपीट जुन मृतकको छातीमा ३ वटा Anti mortom चोट देखिएको छ सोही चोटको पीडाबाट बेहोस भएको अवस्थामा बिना घिमिरेको डोरी वा कुनै वस्तुबाट गला दबाई कसी मारेको भन्ने कुरा मृतकको घुँडा जमीनमा टेकाई बाँसको बलो तथा मृतकको घाँटी दुबै ठाउँमा डोरी वा पासोको गाँठो नपारी फन्को मात्र पारेर राखेको वारदातको प्रकृतिबाट पुष्टि हुन आएको हुँदा प्रस्तुत वारदात आत्महत्या नभई कर्तव्य हो भन्ने पुष्टि हुने ।

इजलास अधिकृत : दीपक ढकाल
इति संवत् २०६७ साल साउन २७ गते रोज ५ शुभम् ।

४

मा.न्या.श्री रणबहादुर बम र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, २०६२ सालको दे.पु.नं. ९७१७, छूट जग्गा दर्ता गरी पाऊँ, इन्द्रभूषण भा वि रामशरण भा

पक्ष विपक्षले धनुषा जिल्ला अदानलतमा गरेको मिलापत्र सो मिलापत्रभन्दा पछि भएको शहरी नापीको कारणले प्राविधिक रूपमा कार्यान्वयन हुन नसकेको अवस्थामा नापी शाखाले कित्ताकाट हुन नसक्ने जानकारी मालपोत कार्यालयलाई गराएपछि पक्षहरूको सहमतिको स्रेस्ता कायम गर्न नसक्ने हुँदा सो कार्यालयले आफैँ विवादित जग्गाको हक बेहकमा निर्णय गरी स्रेस्ता कायम गर्न नसक्ने हुँदा सो कार्यालयले हक बेहकका सम्बन्धमा सक्षम निकायबाट निर्णय गराई ल्याउनु भनी पक्षहरूलाई जानकारी गराई हक बेहकको प्रश्न निरोपण भै नआएसम्मका लागि तामेलीमा राखी दिनुपर्ने भन्ने निर्णय अन्यथा नदेखिने ।

इजलास अधिकृत : श्रीप्रकाश उप्रेती

कम्प्युटर : निर्मला भट्ट

इति संवत् २०६७ साल असार ७ गते रोज २ शुभम् ।

५

मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौला र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल, २०६५ सालको दे.पु.नं. ०६२५, ००००२, अंश चलन, मनिष नेपाल समेत वि. विनोदराज शर्मा (नेपाल), विनोदराज शर्मा (नेपाल) वि. मनिष नेपाल समेत

रत्नकुमारीले प्राप्त गरेका जग्गाहरू शे.व. र हा.व. बाहेक घरको सगोलको सम्पत्तिबाट बढे बढाएर आर्जन गरेको संयुक्त सम्पत्ति हो भन्ने दावी पनि गर्न सकेको समेत देखिएन । प्रतिवादी रत्नकुमारीले हक हस्तान्तरण गरेका जग्गाहरू जुनसुकै स्रोतबाट प्राप्त गरेको भए पनि बाबु आमाबाट प्राप्त सम्पत्ति छोरा छोरीलाई पैत्रिक सम्पत्ति हुने भन्नेसम्म वादीहरूले दावी लिएको देखिन्छ । बाबु आमाले जुनसुकै तवरबाट प्राप्त गरेको बण्डा गर्न बाँकी रहेको अवस्थामा सो बण्डा गर्न बाँकी रहेको सम्पत्ति मात्र छोराछोरीको लागि पैतृक हुने कानूनी व्यवस्था हो । तर प्रस्तुत मुद्दामा

रत्नकुमारीको नाउँमा रहेको सम्पत्ति निज जीवित छँदै आफूखुश गरिसकेको र अब बण्डा गर्न बाँकी रहेको नदेखिँदा वादीको दावीबमोजिम बण्डा गर्नुपर्ने देखिएन । रत्नकुमारीको आफूखुस गर्न पाउने सम्पत्ति नै मिति २०६३।६।२ मा विनोदराज शर्मालाई अष्टलोह लिखत समेत गरेको व्यवहारलाई अन्यथा भन्न र गर्न मिलेन । तसर्थ, प्रतिवादीले आफूखुस गर्नपाउने सम्पत्तिको हक हस्तान्तरण गरिसकेको अवस्थामा सो सम्पत्ति वादीले अंश हक लाग्ने भनी दावी गर्न स्त्री अंश धनको महलको ४ र ५ नं. तथा अंशबण्डाको महलको १८ नं ले नमिल्ले ।

इजलास अधिकृत : दुर्गाप्रसाद भट्टराई
इति संवत् २०६७ साल जेठ १९ गते रोज ४ शुभम् ।
यसमा यसै लगाउका निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसैअनुसार फैसला भएका छन् :

- २०६५ सालको दे.पु.नं. ०००३, ०००४, लिखत बदर, विनोदराज शर्मा (नेपाल) वि. मनिष नेपाल समेत, इन्दिरा रेग्मी वि. मनिष नेपाल समेत
- २०६६ सालको फौ.पु.नं. ०४७६, जालसाजी, मनिष नेपाल समेत वि. विनोदराज शर्मा (नेपाल)

६

मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौला र मा.न्या.श्री अवधेशकुमार यादव, २०६४ सालको दे.पु.नं. ०७५२, निर्णय बदर हक कायम, नक्कली गारू वि. रामकृष्ण गारू समेत

अंशबण्डा हुँदाका बखत मोहरमानको नाउँमा तत्कालीन अवस्थामा हक कायम हुन आएको त्यस्तो अवण्डा जग्गा वादी प्रतिवादीका बीच बण्डा लाग्न नसक्ने भन्न मिलेन । अतः बाबुको नाउँमा मोही हक कायम भएको र बाबुको मृत्युपश्चात् हकदार पुनरावेदक नक्कली गारू र प्रत्यर्थी रामकृष्ण गारूको नाउँमा संयुक्त रैतानी गरी मोही नामसारी हुने ।

इजलास अधिकृत : दुर्गाप्रसाद भट्टराई
इति संवत् २०६६ साल असार २१ गते रोज २ शुभम् ।

७

मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौला र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की, २०६५-CR-०४७७, जीउ मास्ने बेच्ने, वीरसिंह तामाङ्ग, वि. नेपाल सरकार

प्रतिवादीले अभियोग दावीबमोजिमको कसूर गरेको होइन भनी अदालतमा इन्कारी बयान गरेपनि सो व्यहोरा अन्य प्रमाण पेश गरी पुष्टि गर्न नसकेकाले सो इन्कारी बयानको आधारमा मात्र प्रतिवादीलाई निर्दोष मान्न मिल्ने नदेखिँदा प्रतिवादीलाई जीउ मास्ने बेच्ने कार्य (नियन्त्रण) ऐन, २०४३ को दफा ४(ग) को कसूरमा ऐ ऐनको दफा ८(३) बमोजिम १० वर्ष कैद हुने ।

इजलास अधिकृत : गायत्री रेग्मी
कम्प्युटर : बेदना अधिकारी
इति संवत् २०६७ साल जेठ ५ गते रोज ४ शुभम् ।

८

मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौला र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की, २०६१ सालको फौ.पु.नं. ३७८५, लागू औषध चरेश, नेपाल सरकार वि. राजेन्द्र गोपाल राजभण्डारी समेत

मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौलाको राय:

भन्सार कार्यालयको मिति २०५७।८।१२ को पत्रबाट कार्गो सामान जाँच कार्यमा सुरक्षा निकायका अन्य पदाधिकारीको संलग्नता समेत हुने देखिएकोमा यी प्रतिवादीहरूलाई मात्र विपक्षी बनाई मुद्दा दायर गरेको अनुसन्धान कार्य आफैँमा हचुवा र विरोधाभाषपूर्ण रहेको छ । यी प्रतिवादीहरूको मात्र संलग्नता भनी शंका र अनुमानको आधारमा निजहरूउपर मुद्दा चलाइएको देखिन्छ । शंकारहित वस्तुगत प्रमाणको अभावमा निजहरूको संलग्नता पुष्टि हुन आएन । अतः प्रतिवादीहरू राजेन्द्र गोपाल राजभण्डारी र श्यामलाल ध्वजको प्रस्तुत कसूर अपराधमा संलग्नता भएको भन्ने आरोप पुष्टि हुन नसक्ने ।

मा.न्या.श्री सुशीला कार्कीको राय:

चेकजाँच गरेकै वाकसबाट क्यानाडामा ५७६ के.जी. लागू औषध बरामद भएको देखिँदा

निजको कसूरमा पूर्ण संलग्नता रहेको पुष्टि भैरहेकोमा निज अदालतममा इन्कार रहेको भनी पुनरावेदन अदालत पाटनले सफाइ दिएको फैसला मिलेको देखिएन । तर वादी नेपाल सरकारले लागू औषध नियन्त्रण ऐन, २०३३ को दफा १८ बमोजिम जफत गर्न माग गरेको गाडी प्रतिवादी पूर्णलाल श्रेष्ठको नाममा नभई अर्कै व्यक्ति वाग्ले इन्टरप्राइजेजको नाउँमा रहेको देखिँदा सवारी साधन जफत नगर्ने पुनरावेदन अदालत पाटनको निर्णय सो हदसम्म मिलेकै देखिने ।

माननीय न्यायाधीश श्री मोहनप्रकाश सिटौलाको रायसँग सहमत हुन नसकिएकाले सर्वोच्च अदालत नियमावली, २०४९ को नियम ३(क) बमोजिम पूर्ण इजलासमा पेश हुने ।

इजलास अधिकृत : हरिराज कार्की
इति संवत् २०६६ साल पुस १९ गते रोज १ शुभम् ।

९

मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौला र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, २०६६-CI-०२२८, मोही लगत कट्टा, निलम चौधरी थारू वि. हुकुमलाल थारू

प्रतिउत्तर दर्ता भई कारवाही प्रक्रिया अधि बढी सकेपछि प्रतिउत्तरमा जिकीर लिएका आधार प्रमाण समेतका बारेमा कानूनबमोजिम बुझी निर्णय गर्नुपर्नेमा सो नगरी “यस कार्यालयको मिति २०६२।२।२६ को निर्णयबाट मोही लगत कट्टा हुने गरी भएको निर्णय त्रुटिरहित र कानूनसम्मत नै रहे भएको देखिँदा सो निर्णय यथावत् कायम रहने ठहर्छ” भनी भूमिसुधार कार्यालय मोरङबाट मिति २०६२।८।२२ मा भएको निर्णय कानूनको रोहमा मिलेको नदेखिँदा सो निर्णय बदर हुने ।

इजलास अधिकृत : उद्धव गजुरेल

कम्प्युटर : रानु पौडेल

इति संवत् २०६७ साल जेठ २१ गते रोज ६ शुभम् ।

- यसमा यसै प्रकृतिको २०६६-CI-०२२९, मोही लगत कट्टा राजेन्द्र चौधरी वि. हुकुमलाल थारू समेत भएको मुद्दामा यसैअनुसार फैसला भएको छ ।

१०

मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौला र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, ०६६-WO-०६७५, उत्प्रेषण, दक्षकुमार पोखरेल वि. अख्तियार दुरूपयोग अनुसन्धान आयोग समेत

विभागीय कारवाही गर्नुभन्दा अगाडि कारवाही गर्न लागिएको कर्मचारीलाई सफाइ पेश गर्ने मनाशिव मौका प्रदान गरिने व्यवस्थालाई आत्मसात गरी नियममा नै स्पष्ट रूपमा व्यवस्था गरेको देखिन्छ । कसैले आफ्नो विरुद्धको कारवाहीमा सफाइ पेश गर्ने मौका पाउनु पर्छ भन्ने आधारभूत न्यायको सिद्धान्त जुन प्राकृतिक न्यायको सिद्धान्तको रूपमा पनि परिभाषित छ । कानूनले सफाइको मौका प्रदान गर्न मनासिव नभएमा सफाइको मौका नदिए पनि हुने भनी गरेको व्यवस्थाले सफाइको मौकाको महत्वको प्रतिस्थापित गरेको नभै खास र उचित अवस्थाहरूमा त्यस्तो मौकाको अनिवार्यताको व्यवस्थासम्म (केही अपवाद बाहेक) गरेको मान्नु पर्ने ।

कुनै संस्था निकाय वा कार्यालयले कानूनबमोजिम आफ्नो कर्मचारीलाई विभागीय कारवाही र सजाय गर्न सक्छ, तर त्यस्तो कारवाही कानूनअनुरूप हुनुपर्छ । प्रस्तुत मुद्दामा सफाइको मौका समेत प्रदान नगरी निवेदकलाई स्तरवृद्धि कायम नरहने गरी विपक्षी काठमाडौं उपत्यका खानेपानी लिमिटेडबाट भएको निर्णय त्रुटिपूर्ण हुने ।

इजलास अधिकृत : गायत्रीप्रसाद रेग्मी

कम्प्युटर : विश्वराज पोखरेल

इति संवत् २०६७ साल असार २७ गते रोज १ शुभम् ।

११

मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौला र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६३ सालको स.फौ.पु.नं. ०१७२, जबरजस्ती करणी, नेपाल सरकार वि. रत्नलाल श्रेष्ठ

पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण गर्दा करणीकै कारणले निजको योनी रातो भएको भन्ने स्थापित हुन नसकेको, पीडितको कपडामा शुक्रकीट फेला नपरेको, पीडित बालिकाको कन्याजाली नच्यात्तिएको

र योनी बाहिर पनि घर्षणका कुनै चिन्ह नदेखिएको, प्रतिवादीको इन्कारी बयान रहेको तथा सो इन्कारीलाई निजका साक्षीको बकपत्रबाट पुष्टि भएको समेतका आधार प्रमाणबाट प्रतिवादीले अभियोग दावीबाट सफाई पाउने ।

इजलास अधिकृत : विमल पौडेल

कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०६७ साल जेठ २५ गते रोज ३ शुभम् ।

१२

मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौला र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६३ सालको दे.पु.नं. ९०६५, हर्जाना सहितको रकम दिलाई पाऊँ, पिम्वा भोटे वि. विजयतध्वज थापा

प्रतिवादीले सम्भौताबमोजिम चामल बुभिसकेपछि सो चामल तोकिएको स्थानमा लगी बुभाई सोको भरपाई पेश गर्न सक्नु पर्नेमा सो गर्न सकेको नदेखिँदा प्रतिवादीले करार (सम्भौता) उल्लंघन गरेकोले प्रतिवादीबाट फिराद दावीबमोजिम बिगो तथा हर्जाना वादीले भराई पाउने ।

इजलास अधिकृत : विमल पौडेल

कम्प्युटर : भवानी हुंगाना

इति संवत् २०६७ साल जेठ २५ गते रोज ३ शुभम् ।

एकल इजलास

१

सं.प्र.न्या. श्री रामप्रसाद श्रेष्ठ, २०६७-WO-००४०, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, उषा श्रेष्ठ वि. महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय समेत

संविधानले प्रदान गरेको अधिकारक्षेत्रअन्तर्गत महान्यायाधिवक्ताले आफ्नो विवेक प्रयोग गरी यिनै निवेदिका उषा श्रेष्ठको जाहेरीले वादी नेपाल सरकार विरुद्ध सुन्दरमान राई समेत भएको केही सार्वजनिक अपराध मुद्दामा पुनरावेदन अदालत, पाटनको फैसलाउपर पुनरावेदन नगर्ने गरी भएको मिति २०६६।१।२० को निर्णय महान्यायाधिवक्ताको व्यावसायिक उन्मुक्तिअन्तर्गत पर्ने भएकाले त्यस्तो निर्णयउपर

यस अदालतबाट हस्तक्षेप गरी त्यसमा न्याय निरोपण गर्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : हरि कोइराला

कम्प्युटर : मुकुन्द बिष्ट

इति संवत् २०६७ साल साउन १८ गते रोज ३ शुभम् ।

२

सं.प्र.न्या. श्री रामप्रसाद श्रेष्ठ, २०६७-WO-००४९, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, हेमा महर्जन वि.मोतिराम चापागाई समेत

निवेदिकाले कि.नं. ६५२ को कि.नं. ६५२ को ०-३-१ जग्गा र सोमा बनेको घर समेत हिमालय फाइनान्स कम्पनीले आफ्नो नाउँमा सकार गर्ने गरेको मिति २०६६।१०।२९ को निर्णय उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर गरिपाऊँ भनी प्रस्तुत निवेदन दायर हुन आएको छ । उक्त घर जग्गा विपक्षीमध्येका मोतिराम चापागाई र सरोज न्यौपानेले संयुक्त रूपमा रजिष्ट्रेशन पारित गरी लिएको देखिँदा त्यसरी रजिष्ट्रेशन पारित गरी लिने दिने कार्य बदर हुँदासम्म हिमालय फाइनान्स लिमिटेडले आफ्ना नाउँमा सकार गर्ने गरी गरेको मिति २०६६।१।२२ को निर्णय बदरको दावी गर्ने हकद्वैया नै निवेदिकामा रहन सक्दैन । नेपालको अन्तरिम संविधान, २०६३ को धारा १०७(२) बमोजिम यस अदालतले असाधारण अधिकारक्षेत्रअन्तर्गत दिएको प्रस्तुत रिट निवेदनको रोहबाट हेरी न्याय निरोपण गर्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : हरि कोइराला

कम्प्युटर : मुकुन्द बिष्ट

इति संवत् २०६७ साल साउन १८ गते रोज ३ शुभम् ।

३

सं.प्र.न्या. श्री रामप्रसाद श्रेष्ठ, २०६७-WO-००५२, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, नरेशबाबु श्रेष्ठ वि. प्र.मं. तथ मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत

सार्वजनिक वा सरकारी जग्गा मानिने ठाउँ वा त्यस्तो ठाउँबाट २०० मीटरको क्षेत्रभित्र मदिरा वा मदिराजन्य पदार्थको कुनै पनि किसिमको विज्ञापन गर्न निषेध गर्ने गरी भएको मिति २०६६।१।२८ को निर्णय एवं नेपाल सरकार, गृह मन्त्रालयबाट सबै नगरपालिकाहरूलाई धुम्रपान

तथा मदिराजन्य विज्ञापनका होडिङ्ग बोर्डहरू हटाउने सम्बन्धमा मिति २०६६।१।२७ एवं नेपाल सरकार, स्थानीय विकास मन्त्रालयको मिति २०६७।१।१७ को पत्रअनुसार काठमाडौं महानगरपालिकाद्वारा नागरिक दैनिकमा प्रकाशित मिति २०६७।४।३ को सूचना समेत यस अदालतबाट संवत् २०५३ सालको रिट नं. १९२४ को रिट निवेदनमा भएको आदेश कार्यान्वयनको सिलसिलामा भएको देखिँदा अदालतले आफ्नै आदेशको कार्यान्वयनलाई अवरूद्ध तुल्याउने गरी आदेश जारी गर्ने अवस्था नहुँदा प्रारम्भिक रूपमै प्रस्तुत निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत : हरि कोइराला

कम्प्युटर : मुकुन्द विष्ट

इति संवत् २०६७ साल साउन १८ गते रोज ३ शुभम् ।

४

मा.न्या.श्री तपबहादुर मगर, २०६७ सालको रिट नं. ०६६-WO-१२०८, उत्प्रेषण परमादेश, *आसपानी गुरुङ्ग समेत वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत*

कसैलाई पनि कानूनबमोजिम बाहेक पक्राउ वा धरपकड गर्ने अवस्था हुँदैन र त्यसो गर्न मिल्दैन । निवेदकले उठाएका अन्य विषयका सन्दर्भमा हेर्दा ती विषयहरू रिट निवेदनको अन्तिम किनारा हुँदाका बखत निरोपण गर्नुपर्ने विषय देखिएको छ र ती विषयहरूमा अन्तिम निर्णय हुँदा निराकरण हुने नै हुन्छ । यस्तो अवस्था र स्थितिमा

सुविधा सन्तुलनको दृष्टिकोणबाट समेत हेर्दा तत्काल अन्तरिम आदेश जारी गर्न पर्ने अवस्था विद्यमान नदेखिने ।

इति संवत् २०६७ साल असार १ गते रोज ३ शुभम् ।

५

मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौला, २०६६-WO-१०४६, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, *मोहनकुमार रिजाल समेत वि.प्र.मं. तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत* सेवा एउटै भए पनि, एकै समूहमा नराखी छुट्टाछुट्टै रूपमा समूहकृत गरिएबाट उक्त दुबै समूहको कर्मचारीले सम्पादन गर्ने कार्यको प्रकृतिमा एकरूपता रहेको भन्न मिल्ने देखिँदैन । कामको विशिष्टीकृत प्रकृति, कार्यक्षेत्रको जोखीमयुक्त अवस्था, कार्यक्षेत्रमा लगाउने पोशाकको एकरूपता र दिनरात नभनी कर्तव्य पालनको क्रममा कार्यक्षेत्रमा रहनु पर्ने उपस्थितिका कारण नेपाल सरकारले आवश्यक ठानेका सेवा समूहमा काम गर्ने कर्मचारीहरूलाई आवश्यकताअनुसार उपयुक्त भत्ता सुविधा प्रदान गर्ने गरी निर्णय गर्नसक्ने नै देखिँदा छुट्टै समूहलाई आवश्यकताको आधारमा सुविधा दिएको भन्दैमा सोही आधारमा केवल समान तह र एउटै सेवाअन्तर्गतको कर्मचारी भएकै नाताले हामीले पनि भत्ता पाउनु पर्छ भन्ने जिकीर मनासिव नदेखिने ।

इजलास अधिकृत: हरिराज कार्की

इति संवत् २०६७ साल वैशाख ३० गते रोज ५ शुभम् ।

- हामीले इजलासबाट प्रत्येक महिनाको अधिल्लो वा पछिल्लो १५ दिनभित्र प्राप्त निर्णयहरू दर्ता गर्दछौं । र ती सबै यस बुलेटिनको आगामी अङ्कमा निश्चित रूपमा प्रकाशित हुन्छन् ।
- बुलेटिनमा सम्बन्धित इजलास अधिकृतबाट प्राप्त नभएका निर्णय मात्र प्रकाशन हुन छुट्टिन्छन् ।
- बुलेटिनमा प्रकाशित सबै निर्णयहरू प्रत्येक वर्षको चैत मसान्तपछि, सर्वोच्च अदालत पुस्तकालयमा रहन्छन् ।
- यो बुलेटिन तथा *नेकाफ*को २०६५, २०६६ र २०६७ का सबै अङ्कहरू सर्वोच्च अदालतको वेब साइटमा पढ्न र त्यसबाट डाउनलोड गर्न सकिन्छ ।
- निकट भविष्यमा २०६४ सालका बुलेटिनहरू तथा *नेकाफ*हरू पनि हाम्रो वेब साइटमा राखिदैछन् ।

सर्वोच्च अदालत
फैसला कार्यान्वयन निर्देशनालय
कैद, जरीवाना र सरकारी बिगो तिर्ने बुझाउनेसम्बन्धी
जरूरी सूचना

सर्वोच्च अदालत र मातहत अदालतबाट भएका फैसला तथा अन्तिम आदेशको कार्यान्वयन गर्ने, फैसला वा अन्तिम आदेशको कार्यान्वयन सम्बन्धमा मातहतका अदालत तथा अर्धन्यायिक निकायहरूलाई नीतिगत निर्देशन दिने र कम्प्युटरमा पनि लगत राख्ने केन्द्रीय निकायको रूपमा सर्वोच्च अदालतअन्तर्गत रहने गरी फैसला कार्यान्वयन निर्देशनालय स्थापना भएको छ ।

अदालतको अन्तिम फैसलाले लागेको कैद, जरीवाना र सरकारी बिगोको हकमा पछि प्रकाशित हुने सूचनाबमोजिम तिर्ने बुझाउन आएमा घटीमा २५ र बढीमा ७५ प्रतिशत छुट दिने व्यवस्था छ । साथै जिल्ला अदालत (आठौं संशोधन) नियमावली, २०५२ अनुसार लगत फछ्यौट समितिलाई पनि लगत कट्टा गर्ने अधिकारमा वृद्धि गरिएको छ । कैद, जरीवाना र सरकारी बिगो बाँकी रहेका व्यक्तिलाई पक्राउ गरी बुझाउने प्रहरी, जोसुकै व्यक्ति र संस्थाले पुरष्कार पाउने कानूनी व्यवस्था पनि छ । अब उप्रान्त कैद, जरीवाना र सरकारी बिगो तिर्ने बुझाउन बाँकी रहेका व्यक्तिहरू यथाशक्य चाँडो सम्बन्धित अड्डा अदालतमा उपस्थित भै आफूलाई लागेको दण्ड, जरीवाना प्रचलित कानूनबमोजिम तिर्नु, बुझाउनु भै फरफारक लिनु हुन अनुरोध छ ।

दण्ड, जरीवाना बाँकी भएका त्यस्ता व्यक्तिहरूको लगत असूलउपर गर्न अख्तियार दुरूपयोग अनुसन्धान आयोग, निर्वाचन आयोग, र लोकसेवा आयोग, नेपाल सरकारका - परराष्ट्र, उद्योग, वाणिज्य, निर्माण तथा यातायात र स्थानीय विकास लगायतका मन्त्रालयहरू, जिल्ला प्रशासन कार्यालय, प्रहरी कार्यालय, भन्सार कार्यालय, मालपोत कार्यालय, यातायात व्यवस्था कार्यालय तथा सम्बन्धित गाउँ, नगर र जिल्ला विकास समिति तथा कौसी तोषाखाना एवं निजामती किताबखानालाई समेत लगतको आधारमा लगत असूल गर्न क्रमशः अनुरोध गरी पठाइने छ ।

साथै सर्वोच्च अदालतको वेबसाइटमा पनि त्यस्तो लगत राखिने हुँदा सम्बन्धित सबैको जानकारीको लागि यो सूचना प्रकाशित गरिएको छ ।

सम्बन्धित अड्डाअदालतहरूले पनि यसै सूचनाको आधारमा लगत असूली र फछ्यौट कार्यलाई अभू बढी प्राथमिकता दिनु होला । अन्य थप जानकारी चाहिएमा यस निर्देशनालय र नजिकको अदालतहरूमा सम्पर्क राख्नु हुन समेत अनुरोध छ ।

फैसला कार्यान्वयन निर्देशनालय
ललितपुर कुपण्डोल
फ्याक्स/फोन नं. ०१-५५३४८२५